भारत की महान क्रांतिकारी महिलाएँ

विजय कुमार गुप्ता

सुरुचि प्रकाशन
केशव कुंज, झण्डेवाला, नई दिल्ली-110055

अनुक्रमणिका

	विषय	पृष्ठ
1.	रानी अवंतिबाई	1
2.	कल्याणी देवी शुक्ल	4
3.	रानी चेनम्मा	7
4.	वीरांगना झलकारी	11
5.	प्रकाशवती पाल	14
6.	प्रीतिलता वादेदार	18
7.	मदाम भीका जी कामा	20
8.	मैना	26
9.	सावित्री देवी	31
10.	दीदी सुशीला मोहन	33
11.	रानी लक्ष्मीबाई	41
12.	श्रीमती लीला नाग	45
13.	दुर्गा देवी वोहरा	47
14.	श्रीमती इंदुमती सिंह	51
15.	कनकलता बरुआ	52
16.	श्रीमती कमला चटर्जी	53
17.	कमला मिरी	53

	विषय	पृष्ठ
18.	श्रीमती कल्याणी देवी	54
19.	श्रीमती अमिता सेन	54
20.	कुमुदिनी	56
21.	गौरा बाई	57
22.	कु. जयावती संघवी	58
23.	श्रीमती नवनीत कोमला सिन्हा, लावण्यलता चंदा	58
24.	कु. प्रभावती	59
25.	फुलेश्वरी	59
26.	भागेश्वरी	60
27.	मातंगिनी हाजरा	60
28.	राधिका देवी	61
29.	रुक्मिणी बाई	62
30.	श्रीमती रेणुका सेन	62
31.	श्रीमती गुरुदयाल कौर	63
32.	कुमारी जानकी थीवर्स, श्रीमती एम.ए. चिदंबरम तथा कर्नल लक्ष्मी	64
33.	कुमारी ज्योतिर्मयी गांगुली	65
34.	कुमारी राधा पाटनकर	66
35.	वीरम्मा	66
36.	श्रीदेवी मुत्सद्दी	67

भूमिका

अंग्रेजों ने जब भारत पर आक्रमण किया तो उनके सैनिक कराह उठे और कहने लगे बहुत गर्मी है- बहुत गर्मी है। उनके कमान्डेंट ने एक बैठक की और सैनिकों से पूछा "तुमने यहाँ आक्रमण क्यों किया?" "सैनिकों का उत्तर था "यहाँ राज्य स्थापित करने के लिए" और बैठक समाप्त कर दी। एक घंटे के बाद फिर सैनिकों को इकट्ठा किया और पूछा कैसा मौसम है?" सैनिकों का उत्तर था "कोई गर्मी नहीं है- कोई गर्मी नहीं है।" बदल मौसम में नहीं उनकी मानसिकता में आया। अब भारतीयों को सेना में भर्ती करना था। भर्ती शुरू हो गयी। उपरांत सैन्य संचलन के लिए लेफ्ट-राइट सिखाना था। अंग्रेजी शब्द 'लेफ्ट-राइट उनकी समझ से बाहर था। अतएव प्रत्येक भारतीय सैनिक के एक पैर में 'घास' और दूसरे पैर में 'पत्ती' बाँध दी। संचलन सिखाते हुए बोलते थे, घास - पत्ती, घास - पत्ती फिर लेफ्ट - राइट, लेफ्ट - राइट। ऐसा करते-करते लेफ्ट - राइट सिखा दिया। अब उनके सैन्य दल बनाने थे। उसमें भी अलगाव के भाव भर दिये अर्थात् यह गोरखा रेजिमेंट, यह कुमायुं रेजिमेंट, यह जाट रेजिमेंट, यह सिक्ख रेजिमेंट ताकि सब अलग-अलग रहें। उसके बाद कहा कि भारत में सभी बाहर से आये यूनानी, पारसी, यहूदी, मुसलमान और हम अंग्रेज भी, साथ ही कहा कि आर्य भी बाहर से आए। अंत में कहा कि भारत कोई राष्ट्र नहीं है बल्कि यह राष्ट्र बनने की प्रक्रिया में है और इस प्रकार से भारत की मिट्टी में अपने पैर जमा लिए।

अब शुरू हुआ उनका तानाशाही रवैया, दमनकारी नीति और अत्याचारों

की कहानी। फलस्वरूप सिहरते- सिहरते यह जनमानस की टीस बन गई और उस टीस में से उभरा आक्रोश सन् 1857 की ज्वाला बन गया। सर्वत्र विद्रोह की चिनगारी भड़कने लगी और देखते -देखते उसने एक विशाल आंदोलन का रूप ले लिया। जिसे नाम दिया गया सन् 1857 का स्वतंत्रता समर।

इसके लिए हजारों ही नहीं लाखों नर-नारियों ने अपनी जान की बाजी लगाकर भारत को आजादी दिलाने में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। हम याद कर रहें हैं उन महिला क्रांतिकारियों को जिन्होंने अपने शौर्य, साहस, और बलिदान से देश को आजाद कराने हेतु अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया।

प्रस्तुत पुस्तक ''भारत की महान क्रांतिकारी महिलाएँ'' के माध्यम से सुहृद पाठक भी उन्हें अपनी भाव-भीनी श्रद्धांजलि समर्पित करेंगे- ऐसा हमारा विश्वास है।

-विजय कुमार गुप्ता

शहीद के परिजनों के नाम एक पाती

क्षत-विक्षत मैं पड़ा हूँ एक टीले के किनारे,
पास में बस लाशें ही लाशें बिछी हैं,
मेला लगा है गिद्ध, गीदड़, भेड़ियों का,
और टीले पर तिरंगा शान से लहरा है।

लिख रहा हूँ पत्र अब मैं खून से,
क्योंकि स्याही मेरे पास है नहीं,
जेब से कागज निकाला लिख रहा हूँ,
पास से लकड़ी उठाकर लिख रहा हूँ।

प्रार्थना कर रहा अपने पिता से,
रो न देना, इस अचानक प्रयाण पर,
कहना, पीठ पर लगा न कोई शस्त्र है,
मैंने तो हर वार सीने पर सहा है।

माँ के हाथ जाए पत्र तो यों कहना,
एक हूँ तो क्या हुआ, माँ सिंहनी का पुत्र हूँ,
अब तो तू पूरे देश की माँ बन गई है,
और हजारों-हजार पुत्र तेरे हो गए हैं।

बहन को भी मेरी तरफ से बोल देना,
लगाई थी उसने जब माथे पर रोली,
कहा था भइया, पीठ पर खाना न गोली,
इसलिए हर शब्द पूरा कर दिया है।

पत्नी के हाथ में जाए पत्र तो कह देना,
न रोए, न आँसू बहाए, न पोंछे सिन्दूर अपना
युद्ध में खेली थी होली रक्त से,
और उसका सुहाग अमर हो गया है।

उस नन्हे फूल को भी सांत्वना देना,
सुनाना दास्ताँ उसके पिता के शौर्य की,
ताकि स्वयं भी बड़ा होकर एक दिन,
मेरी तरह ही एक पत्र वह लिख सके।

हाथ धीमा पड़ रहा है
बंद होती जा रही हैं पलकें
अंतिम समय में कह रहा हूँ सबसे
अलविदा–अलविदा–अलविदा!

1

रानी अवंतिबाई

रामगढ़ की महारानी अवंतीबाई थी और उनके पति थे विक्रमादित्यसिंह किन्तु अंग्रेंजों ने उन्हें पागल घोषित कर दिया था। उनके दोनों पुत्र अमानसिंह और शेरसिंह उस समय नाबालिग थे। विक्रमादित्य की मृत्यु के उपरांत उन्हें राज्य का उत्तराधिकारी नहीं माना गया। अंग्रेंजों ने उस रियासत को 'कोर्ट आफ वाड्र्स' घोषित कर वहाँ अपना प्रशासक नियुक्त कर दिया। रानी ने अदम्य साहस का परिचय देते हुए प्रशासक को निकाल बाहर किया और अंग्रेजों के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी।

रानी अवंतीबाई ने अपने संदेशवाहकों के द्वारा आसपास के राज्यों को संदेश भेजा। संदेश को पढ़ते ही राजाओं को रानी के दृढ़ संकल्प का आभास हुआ। संदेशपत्र के साथ चूड़ियाँ भी भेजी गई थीं जिसमें लिखा था कि यदि आप भारतमाता को मुक्त कराने के लिए संकल्पबद्ध हैं तो अंग्रेजों के खिलाफ अपनी तलवार उठाएँ अन्यथा चूडियाँ पहनकर अपने घरों में छिप जाएँ।

इस प्रकार एक नारी ने उनके पौरुष को ललकारते हुए उनके कर्त्तव्य की याद दिलाई। उन चूड़ियों को देखते हुए उनका पौरुष जाग उठा और अपनी भृकुटि और तलवार तानकर खड़े हो गये। शाहपुर के राजा जगतसिंह ने नारायणगंज पर आक्रमण कर दिया, दूसरी ओर बहादुरसिंह लोदी ने शाहपुर का मोर्चा सँभाल लिया। सलीमनाबाद में अंग्रेजी सेना के भारतीय सैनिक

विद्रोह का झंडा उठाते हुए पाटन के सूबेदार बलदेव तिवारी से जा मिले। रानी अवंतीबाई और विजयराघवगढ़ के राजा सूरजप्रसाद दोनों ने मिलकर नर्मदा के समस्त उत्तरी क्षेत्र में विद्रोह का मार्ग प्रशस्त कर दिया।

रानी अवंतीबाई ने मंडला के अंतर्गत खैरी नामक ग्राम के पास अपनी व्यूहरचना कर मोर्चा जमाया। वह मंडला पर आक्रमण करना चाहती थी किन्तु उसके पहले ही अंग्रेज सेनापति वाडिंगटन रानी के साथ युद्ध करने आ पहुँचा। इस पहले ही युद्ध में रानी की तलवार चमक उठी और उसके सामने बिजली भी कौंधिया रही थी, धड़ाधड़ शत्रु की सेना का संहार करती जा रही थी। घोड़े पर सवार होकर सेनापति वाडिंगटन ने रानी को घेरने का प्रयास किया। घोड़े पर सवार रानी ने पूरी शक्ति के साथ वाडिंगटन पर अपनी खड़्ग से प्रहार किया किन्तु उसी समय उनका घोड़ा थोड़ा आगे बढ़ गया और तलवार वाडिंगटन के घोड़े पर जा पड़ी। प्रहार की प्रखरता के कारणा उसकी गर्दन कटकर जमीन पर जा पड़ी। वाडिंगटन घबराकर भाग खड़ा हुआ और सैनिकों की भीड़ में ओझल हो गया। रानी की तलवार ने असंख्य सैनिकों को मौत के घाट उतार दिया।

वाडिंगटन अपनी हार से परेशान था, उसने फिर तैयारी कर रानी को उनके किले रामगढ़ में जा घेरा। वाडिंगटन की विशाल सेना से बचते हुए रानी रामगढ़ से हटकर देवहारगढ़ की पहाड़ियों की ओर कूच कर गयी।

आसपास के क्षेत्रों पर कब्जा करते हुए उसने रामगढ़ में आग लगा दी और रानी की तलाश में चल पड़ा।

रानी अवंतीबाई ने पहाड़ियों पर से ही छापामार युद्ध प्रारंभ कर दिया। सैन्य शिविर पर आक्रमण कर वाडिंगटन की सेना को छिन्न-भिन्न कर दिया। इसी समय अंग्रेजों की सहायता करने के लिए उत्तर भारत के कुछ राज्यों और रीवा राज्य की सेना पहुँच गयी और रानी भी पूरे शौर्य के साथ उनसे लोहा लेती रही।

रानी को जब लगा कि अब वह घिर जायेगी तो उन्होंने अपने विश्वासपात्र साथी उमरावसिंह से कहा कि भैया अंग्रेजों के अपवित्र हाथों में

पड़ने से पहले ही अपनी यह लीला समाप्त करना चाहती हूँ। उमरावसिंह ने कहा कि बहन पहले मुझे अपना जौहर दिखा लेने दीजिए, इसके बाद आप जो उचित समझें वैसा करें। इस प्रकार से उमरावसिंह ने अंग्रेजों की सेना मूली-गाजर की तरह काटनी शुरू कर दी और वह काफी आगे बढ़ गया। अब रानी को लगा कि वह अकेली रह गयी है, तुरंत अपनी तलवार अपने पेट में मार अचेत होकर गिर पड़ीं।

कुछ देर के बाद होश आने पर वाडिंगटन ने उन्हें सलाम किया और उनके सहयोगियों के नाम पूछे। उत्तर में बस इतना कहा कि युद्ध के लिए मैं स्वयं जिम्मेदार हूँ- इतना कहकर सदा सदा के लिए अपनी आँखें मूँद लीं। 'हरिओम' का नाद करने के उपरांत 20 मार्च 1858 को एक वीरांगना अपने देश की आजादी के लिए शहीद हो गई। ○○

2

कल्याणी देवी शुक्ल

स्वातंत्र्य आंदोलन में प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान देने वालों में अग्रणी भूमिका निभाने के कारण कल्याणी देवी का योगदान भी सराहनीय एवं श्लाघनीय है। आप मुक्तिनारायण शुक्ल की पत्नी और जयपुर के शुक्ल निवास में रहती थीं। वैसे तो कानपुर के रहने वाले थे ये लोग किन्तु वैद्यक के रूप में जयपुर आकर बस गए थे।

एक बार अच्छे कद-काठी वाले चंद्रशेखर आजाद धीर-गंभीर वैद्य मुक्ति नारायण शुक्ल से बात करते हुए कह रहे थे कि मेरे साथी कुंदनलाल ने आपकी बहुत तारीफ की है और आपको एक विश्वसनीय व्यक्ति बताया है। किन्तु एक बात है कि हमलोगों से संपर्क रखने के कारण आप पर भी संकट आ सकता है। बेकार में क्यों संकट मोल लेते हैं। शुक्ल जी ने कहा "देखिए पंडितजी, यदि हम इस रंग में न रंगे होते तो कुन्दनलाल जी हमें आपसे क्यों मिलवाते। हम आपके साथ कुछ सहयोग करना चाहते हैं- आने वाले संकटों के लिए हम तैयार हैं।

आश्वस्त होने पर आजाद ने उनसे कहा कि हमें हथियार चाहिए। रियासतों से हथियार मिल जाते हैं- आप उनसे सम्पर्क साधिए। मिलने वाला व्यक्ति आपको संकेत शब्द बताएगा तो समझ लीजिए कि उसे हमने भेजा है। पहला संकेत शब्द "गोली" है उसके बाद आने वाला व्यक्ति आपको दूसरा संकेत शब्द बताएगा। अगर संकेत शब्द न बताए तो समझिए वह खुफिया

विभाग का आदमी है।

कुछ दिनों के बाद एक महिला आई और उन्होंने संकेत शब्द "गोली" बता दिया। वैद्य जी आश्वस्त हुए और उन्हें अंदर ले गए। वे दुर्गा देवी थीं और पार्टी के लोग उन्हें दुर्गा भाभी कहते थे। उनके पति भगवती चरण वोहरा लाहोर में बम का परीक्षण करते हुए शहीद हो गए थे। पार्टी में अब दुर्गा भाभी काम करने लगी थीं। आजाद ने कुछ रिवाल्वर और कारतूस के लिए उन्हें वैद्य जी के पास भेजा था।

वैद्य जी की पत्नी श्रीमती कल्याणी देवी ने दुर्गा भाभी को राजस्थानी परिधान पहनने और राजस्थानी भाषा बोलने का प्रशिक्षण दिया। इसमें प्रवीणता प्राप्त करने के बाद जब वे जाने लगीं तो मिठाई के कुछ टोकनों के नीचे हथियार ऊपर मिठाइयाँ रखकर उन्हें विदा किया। कल्याणी देवी और वैद्य जी उन्हें रेल के डिब्बे में बैठाने भी गये जिससे आबकारी विभाग वाले उनकी तलाशी न लें। कल्याणी देवी ने दुर्गा भाभी को घाघरे –लूँगड़े में सजाया था ताकि रत्ती भर भी किसी को संदेह न हो। जाते समय वैद्यजी को "तमंचा' संकेत शब्द बता दिया और वह सामान लेकर आजाद के पास पहुँच गयीं।

कुछ समय के बाद गौर वर्ण का एक व्यक्ति वैद्य जी के पास आया और उसने संकेत शब्द ' तमंचा' बताया। उसका नाम था विश्वनाथ वैशंपायन। उन्होंने कहा आजाद ने दो राइफलें मँगाई हैं। राइफल बेचने के लिए वैद्य जी ने किसी को पटाया और किसी निर्जन स्थान पर राइफलें देने की बात तय हुई। राइफल बेचेने वाला व्यक्ति खरीदने वाले का निशाना देखकर स्तब्ध रह गया और काफी कम दाम पर राइफलें बेच दीं।

अब समस्या उन्हें ले जाने की थी और उसका समाधान निकाला वैद्यजी की पत्नी श्रीमती कल्याणी देवी शुक्ल ने। वे बोलीं–

"काहे घबरात हो ! हम चलिबे तुम्हारे संग और छोटी बिटिया हमारे संग जाई।।"

वैशंपायनजी सोचने लगे कि परदे में रहने वाली एक स्त्री इतना बड़ा जोखिम कैसे उठा सकती है। वैद्य जी ने अपनी पत्नी को हतोत्साहित करने के लिए कहा–

"और अगर पुलिस ने तुझको पकड़ लिया तो"

श्रीमती कल्याणी देवी ने तत्परता से उत्तर दिया–

"तो हमहूँ लाला के संगे जेल जइबे, और का होई।।"

वैद्य जी अपनी पत्नी की सूझबूझ और साहस देखकर आश्चर्य चकित हुए। दो नए ट्रंक और एक टिफिन खरीदा गया। ट्रंकों के अंदर राइफलें और उनके ऊपर श्रीमती कल्याणी देवी तथा उनकी बिटिया के कपड़े रखे गए। टिफिन के हर डिब्बे में नीचे गोलियाँ और ऊपर कलाकंद के टुकड़े रखे गए।

स्टेशन पर आबकारी विभाग के लोगों ने पूछा कि आप लोग कहीं बाहर जा रहे हैं। वैद्य जी ने परेशानी जताते हुए कहा–

"का बताई, भैया! ई ससुर हमार भैया हैं। कानपुर से पढ़ाई छोड़कर भाग आए हैं। अब फिर समझाए– बुझाए के भेज रहिन। उनके संग उनकी भौजाई (कल्याणी देवी) और बिटिया भी जाई रहिन।।"

बिना किसी शंका के जब वे लोग गाड़ी के डिब्बे में बैठे गए तो कल्याणी देवी ने वैशंपायन को छेड़ते हुए कहा– "लाला, इतनी गारी कबहूँ ना खाए हुइहौ।"

श्रीमती कल्याणी देवी और उनकी बिटिया के कारण वैशंपायन की कानपुर तक की यात्रा निर्विघ्न सम्पन्न हुई। पूरा विवरण सुनने के बाद आजाद ने भी कल्याणी देवी की भूरि–भूरि प्रशंसा की। ○○

3

रानी चेनम्मा

कर्नाटक के एक छोटे राज्य के राजा थे मल्लसर्ज, जो कलाप्रेमी थे और विद्वानों का बहुत आदर करते थे। एक दिन उन्होंने अपने राजमहल में श्रीरंगपट्टण के प्रसिद्ध संगीताचार्य सदाशिव शास्त्री के संगीत का आयोजन किया। संगीताचार्य शास्त्री जी ने अपनी कला प्रस्तुति से राजा और प्रजा दोनों को मुग्ध कर दिया। राजा मल्लसर्ज ने वस्त्राभूषण तथा अलंकार इत्यादि देकर संगीताचार्य को सम्मानित किया और साथ ही उनसे अनुरोध किया कि वे उनकी छोटी रानी चेनम्मा को संगीत की शिक्षा दें।

महाराज की दो रानियाँ थीं, बड़ी रुद्रम्मा और छोटी चेनम्मा। काकतीय राजवंश में जन्मी चेनम्मा प्रारंभ से ही मेधावी थी। उसने कन्नड़, उर्दू, मराठी और संस्कृत इत्यादि भाषाओं में निपुणता प्राप्त कर ली थी। शास्त्री जी उन्हें संगीत की शिक्षा भी दे रहे थे। वह आखेट, शस्त्र संचालन और घुड़सवारी में भी पारंगत हो गयी।

अब कित्तूर पर संकट के बादल गहराने लगे। महाराजा मल्लसर्ज को पूना के पेशवा ने कैद कर लिया और कुछ ही दिनों में उनकी इह लीला समाप्त हो गयी। रानी चेनम्मा के पुत्र का भी अल्प आयु में ही निधन हो गया था। बड़ी रानी रुद्रम्मा के पुत्र शिवलिंग रुद्रसर्ज द्वारा राज्य का संचालन कराया किन्तु वे भी गंभीर रूप से बीमार हो गये और अपने बचने की कोई आशा न देख उन्हें पुत्र गोद लेने का परामर्श दिया गया। उन्होंने अपने स्वजन

के पुत्र को गोद लेने का मन बनाया किन्तु दीवान मल्लप्पा शेट्टी को उनका यह विचार ठीक नहीं लगा। मल्लप्पा शेट्टी ने कहा कि इसके लिए धारवाड़ के कलेक्टर मि.थैकरे की अनुमति लेनी होगी। इस पर रानी चेनम्मा कुपित हो उठीं और कहा कि हमारे घरेलू मामलों में दखल देने वाले अंग्रेज कौन होते हैं? अब शिवलिंग रुद्रसर्ज ने मास्त मरडीगौड़ा के पुत्र को गोद लेकर उसका नाम गुरुलिंग मल्लसर्ज रखा। कुछ दिन बाद शिवलिंग रुद्रसर्ज का निधन हो गया। राज-काज का सारा भार रानी चेनम्मा पर आ पड़ा।

दीवान मल्लप्पा शेट्टी पहले से ही नाराज चल रहा था। वह राज्य को हथियाना चाहता था पर रानी के सामने उसकी कुछ भी न चल पाती थी। ईर्ष्या और द्वेष के कारण मल्लप्पा ने इस गोद लेने की सूचना धारवाड़ के कलेक्टर मि. थैकरे को दे दी।

तत्कालीन गवर्नर लार्ड डलहौजी की हड़प नीति से सब भलीं-भाँति परिचित थे। अंग्रेजों की नियत इस फिराक में रहती थी कि कोई देशी रियासत उन्हें हड़पने को मिले। फलस्वरूप कलेक्टर मि. थैकरे ने गोद लिए पुत्र गुरुलिंग मल्लसर्ज को उत्तराधिकार मानने से इनकार कर दिया और कहा कि रानी संरक्षिका का भार छोड़कर सभी अधिकार दीवान शेट्टी को सौंप दें। रानी चेनम्मा ने इसे अमान्य करते हुए कित्तूर की स्वाधीनता के लिए अपनी प्रतिबद्धता प्रकट की।

कलेक्टर थैकरे ने कई संदेश भेजे और बराबर धमकियाँ भी देते रहे किन्तु रानी जस की तस बनीं रही। वह यह भी जानती थीं कि उसके दोनों दीवान मल्लप्पा शेट्टी और वेंकट राव अंग्रेजों से मिले हुए हैं क्योंकि उन दोनों को राज्य का कुछ भाग पाने का आश्वासन मि. थैकरे दे चुके थे।

रानी ने आसन्न संकट को देखते हुए युद्ध की तैयारियाँ प्रारंभ कर दीं और इसके लिए अपनी प्रजा का आह्वान भी किया। कित्तूर की प्रजा जी-जान से अपनी रानी के साथ थी। दोनों देशद्रोही दीवान यद्यपि उनके विरुद्ध थे किन्तु गुरु सिद्दप्पा जैसे योग्य दीवान और बालण्णा, रायण्णा, जगवीर एवं चेन्नवासप्पा जैसे योद्धा उनके साथ थे।

पूरा राज्य युद्ध की तैयारियाँ करने लगा। हिंदू और मुसलमानों दोनों ही पूर्ण सहयोग प्रदान कर रहे थे और वे स्वयं भी युद्धाभ्यास में जुट गईं। रानी स्वयं इन सब तैयारियों का निरीक्षण कर रहीं थीं। देशद्रोही दीवान मल्लप्पा शेट्टी और वेंकटराव इन तैयारियों की जानकारी अंग्रेजों को दे रहे थे। ये दोनों देशद्रोही दीवान गुरु सिदप्पा को अपने मार्ग की बाधा मान रहे थे। उन्होंने एक कुचक्र रचा और रानी की रसोइया महातब्बा को प्रलोभन दिया और खीर में विष मिलाकर रानी को देने को कहा, वह झांसे में आ गई। जैसे ही वह विष मिली खीर देने को हुई कि रानी की शुभेच्छु कलावती ने इसका भंडाफोड़ कर दिया और रानी बच गईं। वह खीर महातब्बा को खिलाई गयी और वह तड़प-तड़प कर मर गयी।

उसी रात चेनम्मा ने अपने सभी सैनिकों को तैयार रहने के लिए कहा साथ ही यह भी कहा कि यह युद्ध केवल कित्तूर के लिए ही नहीं है- यह हमारी पुण्य भूमि भारत की अस्मिता के लिए है।

23 सितम्बर 1824 को रानी ने थैकरे की सेना पर आक्रमण कर दिया। फाटक खोल दिए गये- रानी की मर्दानगी झलक रही थी और वे सिंहनी के समान अंग्रेजी सेना पर टूट पड़ीं। रानी की तलवार शत्रुओं के शीश काटे जा रही थी। देखते- देखते ही थैकरे को भी मार गिराया। मैदान लाशों से पट गया और थैकरे के गिरते ही अंग्रेजी सेना भाग खड़ी हुई। बहुत से सैनिकों को बंदी बनाया गया जिसमें शिविर के अफसर स्टीवेशन और इलियत भी थे। दोनों देशद्रोही दीवान शेट्टी और वेंकटराव को भी गिरफ्तार कर लिया। बाद में मंत्री परिषद की सलाह लेकर उन्हें मृत्यु दंड दे दिया।

अंग्रेज फिर तैयारी में लग गये। मद्रास और मुंबई से कुमुक मँगाकर डीकस के नेतृत्व में 3 दिसंबर 1824 को पुनः आक्रमण कर दिया। इस बार उनका सैन्यदल सशक्त और विशाल था किन्तु रानी के देशभक्त सैनिकों का मनोबल भी कुछ कम नहीं था। एक बार फिर अंग्रेज हारकर भाग खड़े हुए।

अंग्रेजों को यह हार खटक रही थी और तीसरी बार फिर कित्तूर पर आक्रमण किया। इस बार कूटनीति के सहारे कित्तूर के कुछ लोगों को

प्रलोभन देकर अपने पक्ष में कर लिया जिसमें कित्तूर का किलेदार वासप्पा भी सम्मिलित था। उसने बारूद में सूखा गोबर मिलवा दिया साथ ही कुछ अन्य भेद भी दे डाले। भयंकर युद्ध हुआ अंग्रेजों की सेना की भारी क्षति हुई। अंत में रानी को गिरफ्तार कर लिया गया और उनके विश्वासपात्र सैनिकों यथा रायण्णा, जगवीर, नागरकट्टी, चेन्नवासप्पा तथा बालण्णा इत्यादि को गिरफ्तार कर इन योद्धाओं को फाँसी पर लटका दिया।

रानी यह सदमा बरदाश्त न कर सकी और बैंगलहोल में कैद रानी चेन्नम्मा ने अपने आत्मबल से ही अपने प्राणों की आहुति दे दी।

धन्य है वह कित्तूर की नारी, धन्य है शौर्य और साहस की प्रतीक रानी चेन्नम्मा जिसने अंग्रेजों के छक्के छुड़ा दिये। देश की बलवेदी पर अपने प्राण न्यौछावर करने वाली उस तेजपुंज को नमन और श्रृद्धा सुमन समर्पित।○○

4

वीरांगना झलकारी

अंग्रेज सैनिकों ने झाँसी के किले को घेर लिया था। यद्यपि अंग्रेजों की सेना किले की नीचे थी किन्तु उनके सैनिक संख्याबल में अधिक थे और आयुध सामग्री भी प्रचुर मात्रा में थी। इस सबके बावजूद रानी लक्ष्मीबाई किले के अंदर से तोपों द्वारा अग्निवर्षा करवा रहीं थीं। सैनिक भी अपनी बंदूकों से शुत्र पर प्रहार कर रहे थे। दीवार टूटने पर अंग्रेजी सेना के किले के अंदर आ जाने की आशंका बनी हुई थी।

उस आशंका पर विचार करने के लिए मंत्री परिषद की आपात्कालीन बैठक बुलाई। बैठक में विचार-विमर्श चल ही रहा था कि एक प्रहरी ने रानी लक्ष्मीबाई को सूचना दी कि महिला फौज की एक सैनिक आपसे मिलने के लिए आतुर है- कहती है बहुत आवश्यक काम है, उसका नाम है झलकारी।

झांसी के वीर कृषक सदोवासिंह की पुत्री थी झलकारी जिसका जन्म झांसी के निकट भोजला ग्राम में 22 नवंबर 1830 को जमुना देवी की कोख से हुआ था। जंगलों में रहने के कारण उसके पिता ने घुड़सवारी और अस्त्र-शस्त्र संचालन की शिक्षा बचपन से ही दी थी। अल्पायु में ही उसकी माता जमुना देवी का देहांत हो गया। पिता ने पुत्र- रूप में उसका लालन-पालन किया। वीरोचित गुणों से परिपूर्ण उसकी गिनती एक साहसी महिला के रूप में होती थी।

एक दिन की घटना है कि झलकारी पशुओं को चराने जंगल गयी

हुई थी। एक झाड़ी से निकलकर एक चीते ने उस पर आक्रमण कर दिया। उसके पास उस समय जानवर हाँकने वाली केवल एक लाठी ही थी। बिना विचलित हुए अपनी भरपूर शक्ति के साथ लाठी का प्रहार चीते की नाक पर किया। चीता निस्तेज होकर जमीन पर गिर पड़ा फिर दे-दना-दन लाठी उस पर तब तक वरसाती रही जब तक वह मर नहीं गया। इस घटना से झलकारी बहुत लोकप्रिय हो गई। उसके साहस और वीरता के किस्से हरेक की जबान पर थे। कालांतर में उसका विवाह रानी लक्ष्मीबाई के तोपची पूरनसिंह के साथ हो गया। पूरनसिंह ने उसका परिचय रानी लक्ष्मीबाई से कराया जिन्होंने झलकारी को महिला फौज में भर्ती कर लिया।

आपात्कालीन बैठक में झलकारी ही उनसे मिलना चाहती थी। वह आई और अभिवादन के पश्चात् उनसे निवेदन करने की इच्छा प्रकट की।

"आज्ञा हैं" महारानी लक्ष्मीबाई ने कहा

झलकारी ने अपना निवेदन प्रस्तुत किया

"बात यह है, बाई साहब, कि हमारे सैनिक दिन व दिन कम होते जा रहे हैं। खाद्य-सामग्री की समस्या भी एक दिन आने वाली ही है। मेरे पति ने यह भी कहा है कि हमारे सैनिकों में से कुछ तो गद्दारी करेंगे- ऐसी आशंका है। वे अंग्रेजों को निशाना नहीं बनायेंगे- केवल रिक्तता में गोले दागेंगे। ऐसे में अंग्रेजी सेना दीवार तोड़ कर अंदर आ गई तो युद्ध आमने-सामने का हो जायेगा। हम नहीं चाहते हैं कि आप किसी संकट में पड़ें।

महारानी स्वयं भी इस बारे में विचार कर रही थीं। पूछा ! इस संकट से बचने के लिए तुम्हारी क्या योजना है। झलकारी तो यह चाह ही रही थी कि वे ऐसा पूछें।

"बाई साहब! अब आपको इस किले से किसी भी प्रकार से बाहर हो जाना चाहिए। दुश्मन को भ्रम में डालने के लिए पहले मैं आपका वेश धारण कर छोटी सी टुकड़ी लेकर किसी ओर से बाहर निकलूँ ताकि दुश्मन मुझे रानी समझकर मुझे पकड़ने अथवा मारने का प्रयत्न करे। इसी बीच आप किले से बाहर निकल जायें। अतः शत्रु असली रानी कौन है? इस

भ्रम में पड़ा रहे और इस तरह आप सुरक्षित स्थान पर पहुँच जायेंगी। रानी लक्ष्मीबाई को झलकारी की यह योजना सम्यक् लगी।

इस योजना के अंतर्गत दोनों ही किले के बाहर निकल गयीं। पूर्ण रूप से सज्जित झलकारी रानी के वेश में बाहर निकली। शत्रु के साथ भयंकर युद्ध कर रही थी, तभी एक भेदिए ने उसे पहचान लिया। झलकारी ने उसे अपनी गोली का निशाना बनाया किन्तु गोली किसी अन्य अंग्रेज सैनिक को लगी और वह मर गया। अन्ततोगत्वा झलकारी पकड़ी गयी।

जनरल रोज ने कड़ककर कहा कि तुमने रानी बनकर हमको धोखा दिया– तुमने हमारे सैनिक को भी मार डाला। अब तुम्हें भी जान से मार डाला जायेगा।

झलकारी ने उत्तर दिया , मैं सामने हूँ, मार डालो मुझे।

एक अन्य अंग्रेज अफसर ने कहा कि मुझे तो यह पागल लगती है। इस पर जनरल रोज ने भड़क कर कहा कि यदि भारत की एक प्रतिशत नारी पागल हो जाएँ तो अंग्रेजों को सब कुछ छोड़कर यहाँ से जाना होगा।

अंग्रेजों की कैद से झलकारी रात में ही तंबू से बाहर निकल गयी। सवेरा होते ही जनरल रोज ने किले पर भीषण आक्रमण कर दिया। यह देखकर उसके आश्चर्य का ठिकाना न रहा कि झलकारी एक तोपची के पास खड़े होकर गोलियों की वर्षा कर रही है। उसने अपनी तोप दागी जो उसके पास खड़े तोपची को लगी। वह झलकारी का पति पूरनसिंह था। उसको गिरा देख तोप का संचालन स्वयं झलकारी ने सँभाला और शत्रु की सेना में हड़कम्प मच गया, उसी समय एक गोला झलकारी को भी लगा और "जय भवानी" के उच्चार के साथ वह जमीन पर गिर पड़ी किन्तु जाते-जाते वह अपना काम पूरा कर चुकी थी।

उस वीरांगना झलकारी को हम सबका नमन। ○○

5

प्रकाशवती पाल

लहौर के एक कन्या विद्यालय की अध्यापिका प्रेमवती ने कक्षा में पढ़ाते हुए अपनी छात्राओं से कहा कि हमारा देश महान होते हुए भी आज पराधीन है। उस पराधीनता को समाप्त करने के लिए सतत प्रयत्न भी किए जा रहे हैं और हमारा पंजाब भी इस पराधीनता से मुक्ति के लिए सदैव अग्रसर रहा है। एक छात्रा ने प्रश्न किया कि पंजाब में ऐसे कौन से प्रयत्न किए जा रहे हैं। अध्यापिका प्रेमवती यह सुनकर हिचकिचाई और कहा कि इसका उत्तर कक्षा में नहीं दिया जा सकता। उत्तर देने में काफी समय भी लगेगा। छुट्टी के उपरांत तुम्हारे प्रश्न का समाधान किया जा सकेगा।

प्रश्न करने वाली छात्रा थी प्रकाशवती कपूर। प्रकाशवती के साथ उसकी सहेली लज्जादेवी ने भी एक दिन फुरसत के समय अपनी अध्यापिका प्रेमवती से यह विषय छेड़ दिया। प्रेमवती ने उसकी जिज्ञासा और उत्कट भाव को भाँपकर बताया कि कैसे क्रांतिकारी लोग सक्रिय हैं और लाहौर में उन्हें बम बनाने और शस्त्र संचालन का प्रशिक्षण दिया जाता है। इन सब कामों के लिए बस आवश्यकता है धन की।

अब तो प्रकाशवती और उनकी सहेलियों का एक दल बन गया जो धन एकत्रित करता और प्रेमवती के माध्यम से उसे क्रान्तिकारियों तक पहुँचा दिया जाता था। प्रकाशवती के मन में क्रांतिकारी दल में सम्मिलित होने की प्रबल इच्छा जाग उठी। इस विचार को उसने प्रेमवती के सामने प्रकट किया।

प्रेमवती ने उसे एक पत्र देकर कहा कि वह क्रांतिकारी यशपाल से जाकर मिले। उस पत्र को यशपाल को देकर प्रकाशवती ने अपने दिल की बात कही। साथ ही यह भी कहा कि मेरे पिताजी इन सब बातों से दूर रखने के लिए मेरे पैरों में बेड़ियाँ डाल देना चाहते हैं। यशपाल ने कहा कि मैं समझा नहीं, बेड़ियों से आपका क्या तात्पर्य है। आप बड़े भोले हैं जो इतनी छोटी सी बात भी नहीं समझते अर्थात् माता-पिता अपनी संतान को किसी विशेष मार्ग पर जाने से रोकने के लिए उसका विवाह कर देते हैं और इसी को कहते हैं "पैरों में बेड़ियाँ डालना।"

आपके पिताजी आपकी शादी करना चाहते हैं- हाँ! और उन्होंने मेरी शादी तय भी कर दी है। तो इसमें बुराई क्या है? सभी लड़कियों की शादी होती है- आप भी इसका आनंद लें। इस काँटों भरे मार्ग पर चलने से क्या लाभ? देखिए! मैंने निश्चय कर लिया है देश की सेवा करने का और यह काम क्रांतिकारी दल में सम्मिलित होकर ही कर सकती हूँ।

प्रकाशवती जी! मैं आपकी भावनाओं का सम्मान करता हूँ, किन्तु क्रांतिकारी दल में शामिल किए जाने का कोई वायदा भी नहीं कर सकता। तथापि मैं आपको लाहौर में अपने क्रांतिकारी साथियों से मिलाए देता हूँ। उन्हीं के परामर्श से यह संभव हो सकेगा।

यशपाल ने प्रकाशवती को अपने क्रांतिकारी साथियों से मिलवा दिया और उसे दल में सम्मिलित करने की अनुमति मिल गई। अब क्या था? पिता के प्रतिबंधों से मुक्त होने की लालसा। पिता के नाम पत्र लिखकर छत से कूद पिछली गली से निकल कर घर छोड़ दिया। पत्र में लिखा था कि देश सेवा के कार्यों के लिए मैं घर छोड़कर जा रही हूँ।

प्रकाशवती को पहले तो क्रांतिकारी गतिविधियों एवं उसके तौर-तरीकों का प्रशिक्षण दिया गया और फिर गोपनीय परचे बाँटने का काम सौंपा गया। धीर-धीरे वह इन सब बातों में पूर्णतया दक्ष हो गयी।

पार्टी के काम का काफी विस्तार हो चुका है। बम बनाने की फैक्टरी दिल्ली में खोली गयी। यशपाल को बम बनाने का काफी अनुभव हो चुका

था। प्रकाशवती के साथ यशपाल को दिल्ली भेज दिया गया। प्रकाशवती के ठहरने की व्यवस्था महाशय कृष्ण के घर पर की गयी। इस प्रकार बम फैक्टरी में काम करते-करते वे उनकी बारीकियों से भी दक्ष हो गयीं।

दिल्ली असेंबली में बम विस्फोट के कारण भगतसिंह और बटुकेश्वर दत्त को गिरफ्तार कर लाहौर जेल भेज दिया गया था। चन्द्रशेखर आजाद की योजना थी कि भगतसिंह को लाहौर जेल से छुड़ाया जाए। इसके लिए यशपाल को दिल्ली से लाहौर भेज दिया गया। प्रकाशवती दिल्ली में ही रहीं।

बम विस्फोट के कारण क्रांतिकारी भगवती चरण वोहरा की मृत्यु हो गई थी। लाहौर की बहावलपुर कोठी में बम फट जाने के फलस्वरूप भगतसिंह को छुड़ाने की योजना विफल हो गयी। यशपाल ने प्रकाशवती को अपने साले ध्रुवदेव के नाम से पत्र लिखा। पता नहीं कैसे उस पत्र के टुकड़े पुलिस के हाथ लग गए और पुलिस ने उन्हें पकड़ने के लिए महाशय कृष्ण के घर की घेराबंदी की किन्तु प्रकाशवती वहाँ से खिसककर ख्यालीराम गुप्त के घर पहुँच गयीं और वे गिरफ्तारी से बच गई।

दिल्ली बम विस्फोट का पुलिस को पता चल गया और अनेक लोग गिरफ्तार भी हो गए और कई लोग इधर-उधर भाग गए। प्रकाशवती को अब कानपुर में चन्द्रशेखर आजाद के पास पहुँचा दिया गया। आजाद ने प्रकाशवती को निशाना लगाना सिखा दिया जिसमें वे काफी अभ्यस्त हो गयीं। आजाद की प्रेरणा से उन्होंने अपना अंग्रेजी का ज्ञान बढ़ाया और स्वास्थ्य की दृष्टि से व्यायाम इत्यादि भी करने लगीं। 27 फरवरी 1931 को एल्फ्रेड पार्क, इलाहाबाद में आजाद के निधन से उन्हें काफी सदमा पहुँचा। उन्होंने अपना संरक्षक और शुभचिंतक खो दिया था। उसके कुछ दिन बाद ही इलाहाबाद में पुलिस के साथ मुठभेड़ में यशपाल भी पकड़े गये। प्रकाशवती को एक और झटका लगा और उन्हें ऐसा लगने लगा जैसे वह आश्रयहीन हो गई हों। किन्तु संकट से उबर कर वे क्रांति संगठन सूत्रों का स्वयं संचालन करने लगीं। अंततः जून 1934 में प्रकाशवती को दिल्ली से गिरफ्तार कर लिया गया।

यशपाल उन दिनों बरेली जेल में थे। जेल अधीक्षक मेजर मल्होत्रा

अचानक यशपाल के पास जाकर पूछते हैं कि क्या वे मिस प्रकाशवती कपूर को जानते हैं? जी हाँ! जानता हूँ। आप यह क्यों पूछ रहे हैं? मेजर मल्होत्रा ने मुस्कराते हुए कहा "मिस प्रकाशवती कपूर ने डिप्टी कमिश्नर की मार्फत बरेली जेल में आपके साथ विवाह करने का प्रार्थनापत्र दिया है।" एक बार फिर भावुक होकर कहा कि --आप तो अभी दस-ग्यारह साल जेल में रहने वाले हैं- ऐसे में उसका त्याग तो देखिए। त्याग और धर्म की भावना तो केवल हिन्दू नारी में ही हो सकती है।"

यशपाल की सहमति लिखित रूप में प्राप्त कर बरेली जेल को अदालत के रूप में परिणत कर डिप्टी कमिशनर मि. पैडले और गवाहों की उपस्थिति में यशपाल और प्रकाशवती का विवाह संपन्न हुआ, उस समय यशपाल की माँ भी उपस्थिति थीं जिनका आशीर्वाद दोनों को प्राप्त हुआ। अब प्रकाशवती कपूर प्रकाशवती पाल हो गयीं। जेल में विवाह के कारण लोगों को कौतुहल और आश्चर्य हो रहा था किन्तु आनंद के उन क्षणों में मिठाई बाँटी गई। वहाँ से पुनः वे अपनी-अपनी जेलों में वापस गए। जेल से छूटने के बाद ही उन दोनों का मिलन हुआ।

चंद्रशेखर आजाद की प्रेरणा से ही प्रकाशवती का क्रांति-स्वप्न साकार हुआ। बाद में उन्होंने अपना शिक्षा- क्रम जारी रखते हुए कुछ दिन बनारस हिन्दू विश्व-विद्यालय में भी अध्ययन किया। यह सत्य है कि प्रकाशवती को क्रांतिकारी बनाने वाले यशपाल थे तो यह भी निर्विवाद सत्य है कि यशपाल को लेखक बनाने में प्रकाशवती का योगदान है और वे सफल लेखक बन सके। ○○

6

प्रीतिलता वादेदार

प्रीतिलता का जन्म चटगाँव के एक ऐसे परिवार में हुआ था जिसमें लड़कियों को उच्च शिक्षा देना ठीक नहीं माना जाता था। इसके विपरीत उसके भाइयों को पढ़ाने के लिए घर पर भी अध्यापक को रखा गया था। अध्यापक द्वारा घर पर पढ़ाते समय वह बैठकर सुना करती थी। ऐसे पाठ सुन-सुनकर ही वह पढ़ाई में मेधावी हो गई और कुशाग्रता में अपने भाइयों को भी पीछे छोड़ दिया। इसके कारण ही उसे पढ़ने की अनुमति हुई। उसने मैट्रिक की परीक्षा और उपरांत स्नातकीय परीक्षा उत्तीर्ण की। प्रीतिलता वादेदार स्नातक होने के बाद चटगाँव के नंदन कानन हाई स्कूल में प्रधानाध्यापिका हो गई। उसी दौरान क्रांतिकारियों ने चटगाँव शस्त्रागार कांड को अंजाम दिया था और उन पर तथा उनके परिवार जनों पर हो रहे अत्याचारों ने उन्हें विचलित करके रख दिया था।

अब क्या था ? क्रांति की ज्वाला उनके दिले में भड़क उठी और गुपचुप रूप से क्रांति क्रियाकलापों में संलग्न हो गयीं और शीघ्र ही घर-बार छोड़कर वह "इंडियन रिपब्लिकन आर्मी" की सक्रिय महिला सैनिक बन गयीं।

जब रामकृष्ण विश्वास को फाँसी का आदेश हुआ और वे जेल में थे तब प्रीतिलता वादेदार उनकी रिश्तेदार बन गयीं और इसी बहाने जेल जाकर उनसे मुलाकात करती रहीं। उनके नेता थे सूर्यसेन और उनके साथ ही 14 सितंबर 1932 में घलघाट में पुलिस ने घेरकर उन्हें पकड़ना चाहा और इस

मुठभेड़ में दो क्रांतिकारी निर्मल सेन और अपूर्व सेन मारे गये। किन्तु सूर्य सेन और प्रीतिलता वादेदार किसी तरह बचकर भाग निकले।

अब प्रीतिलता का दिल भी शहादत देने के लिए अधीर हो रहा था। चटगाँव के यूरोपियन क्लब पर आक्रमण करने का जिम्मा शैलेश्वर चक्रवर्ती को सौंपा गया किन्तु वे इसमें सफल नहीं हो सके। उनकी निष्क्रियता को देखते हुए प्रीतिलता ने उस योजना को अंजाम देने का जिम्मा स्वयं अपने ऊपर ले लिया।

24 सितंबर 1932 को रात्रि साढ़े दस बजे का समय- यूरोपियन क्लब के चालीस सदस्य आमोद- प्रमोद और मौजमस्ती में झूम रहे थे। उसी समय क्रांतिकारियों का दल वहाँ पहुँचा जिसका नेतृत्व प्रीतिलता वादेदार कर रहीं थीं। देखते- देखते ही खुली खिड़की से एक बम फेंका गया- धमाका हुआ और मौज मस्ती में झूम रहे लोग भयकंपित हो गये। इसके बाद ही दो बम और फेंके गये और गोलियों की बौछार होने लगी। कोहराम मच गया- लोग डर से इधर-उधर भागने लगे- एक अंग्रेज वृद्ध की तुरंत मृत्यु हो गई और अन्य अनेक लोग घायल हो गए- वातावरण चीखों और कराहों से गूँज रहा था। क्रांतिकारी दल कुछ देर वहाँ धूम-धड़ाका करता रहा फिर भाग कर नौ दो ग्यारह हो गया। पुलिस किसी भी क्रांतिकारी को उस समय पकड़ न सकी लेकिन बारह घायल लोगों को उसने अस्पताल पहुँचाया। क्रांतिकारियों की खोज में उन्हें एक लाश मिली- वह एक महिला की लाश थी जो सैनिक वर्दी पहने हुए थी और वह थी प्रीतिलता वादेदार की लाश। शायद प्रीतिलता को यह लगा कि इस कांड में जितने लोग मरने चाहिए थे- वे नहीं मरे और इसी सदमे के कारण जहर खाकर उसने अपनी जीवन लीला समाप्त कर ली। धन्य है यह भावना और धन्य है प्रीतिलता वादेदार जिसने भारत की स्वाधीनता के लिए स्वयं को न्यौछावर कर दिया। ○○

7

मदाम भीका जी कामा

गोरा रंग, उन्नत भाल, स्वस्थ काठी, कजरारे नयन, धीर-गंभीर, चेहरे पर मुस्कान, भारतीय परिधान, बहुरंगी साड़ी पहने वह युवती जब 18 अगस्त 1907 को जर्मनी के स्टुटगार्ट नगर के एक सभागार में आयोजित' अंतर्राष्ट्रीय समाजवादी सम्मेलन ' के मंच पर उपस्थित हुईं तो हजारों लोग उन्हें अपलक देख रहे थे। लगता था जैसे मंत्रमुग्ध हो गए हों और एक दूसरे से कह रहे थे- वाह क्या सौंदर्य है- बिल्कुल भारत की राजकुमारी जैसा। साथ ही सुसंस्कृत और प्रभावशाली भी है। उसकी आभा से सभी चमत्कृत थे।

वह उदीयमान आभा थी मदाम भीकाजी कामा जिन्होंने अपने बैग से एक छोटा सा झंडा निकाला, स्टैंड सहित मेज पर रख दिया और अपना उद्बोधन आरंभ किया- "संसार के स्वतंत्रता प्रेमी महानुभावों! मैं विधिवत् अपने देश का झण्डा फहराकर ही बोलना शुरू करती हूँ। यह झंडा है देश की आन- बान-शान का, भारत के शहीदों के त्याग और तप का प्रतिफल और क्रांतिकारियों का मनोबल। स्वाधीनता के प्रतीक इस झंडे को फहराकर विश्व के सभी स्वतंत्रता प्रेमी लोगों से निवेदन कर रही हूँ कि आप सभी इसके सम्मान में खड़े हों और इसका अभिवादन करें।

लग रहा था कि मदाम भीकाजी कामा के शब्दों ने उन पर जादू कर दिया हो और सभागार में उपस्थित सभी लोग एक साथ उठ खड़े हुए और भारतीय झंडे के सम्मान में अपनी टोपियाँ उतारकर उसका अभिवादन किया।

आपकी इस भावना के लिए मैं हृदय से अपना आभार व्यक्त करती हूँ और पूरे विश्वास के साथ कहती हूँ कि भारत देश के सभी नागरिक आपके इस उत्कट भाव के लिए कृतज्ञ हैं।

विश्व को मानवता का पाठ पढ़ाने वाला भारत आज पराधीन है और ब्रिटिश साम्राज्यवाद की चक्की में पिस रहा है। उसके आर्थिक साधनों का शोषण कर ब्रिटेन मौज से गुलछर्रे उड़ा रहा है। साम्राज्यवाद और समाजवाद एक साथ कैसे रह सकते हैं। आप सब ब्रिटिश साम्राज्यवाद से मुक्त होने और समता तथा समाजवाद के पोषण में अपना सहयोग प्रदान करें- बस इतने ही विनम्र निवेदन के लिए आपके समक्ष उपस्थित हुई हूँ।

भाषण की समाप्ति पर सभा भवन तालियों की गड़गड़ाहट से गूँज उठा और प्रस्ताव के समर्थन में अपने हाथ ऊपर उठाये। केवल ब्रिटेन के प्रतिनिधियों का स्वर नकारात्मक था किन्तु ब्रिटेन के एक प्रतिनिधि हिंडमैन, जो उदारवादी थे, ने प्रस्ताव का समर्थन किया। कौन जानता था कि यह भारतीय महिला ब्रिटेन को बेनकाब कर देगी, उन्हें बेआबरू कर देगी, उनकी साम्राज्यवादी लिप्सा और शोषण मनोवृत्ति की बखिया उधेड़ देगी। किन्तु ब्रिटेन के विरोध के कारण प्रस्ताव पारित न हो सका।

मैडम कामा की यह गर्जना विश्व की गूँज बन गयी। समाजवाद की व्याख्या उसकी अभिव्यक्ति बन गयी। सिंह गर्जना करने वाली मदाम भीकाजी कामा का जन्म एक प्रसिद्ध पारसी व्यापारी सोहराब जी फ्राम जी पटेल के घर 24 सितंबर 1861 को हुआ था। जन्म से ही वह बहुत होनहार थीं। स्कूल का काम किए बिना न वह खाती थी और न ही सोने जाती थी। वाद-विवाद प्रतियोगिताओं में उसे प्रथम पुरस्कार प्राप्त होता था। बचपन में ही उसने कई भाषाएँ सीख ली थीं।

स्वतंत्रता संग्राम की गाथाएँ सुनने में उसकी पर्याप्त रुचि थी, शहीदों के प्रति उसके मन में अगाध श्रद्धा थी। अंग्रेजों द्वारा किए गए अत्याचारों से वह क्षुब्ध हो उठी और यही था क्रांति के बीजारोपण का कारण। इस भाव से दूर रखने के लिए उसकी शादी मुंबई के प्रसिद्ध **वकील के.**आर. कामा के

साथ कर दी गयी। शायद इसके कारण ही उसके मनोभावों में कुछ परिवर्तन आ जाये।

मैडम कामा का दाम्पत्य जीवन कुछ दिन तो चला किन्तु धीर-धीरे उसमें गतिरोध आता गया। उनके पति की ब्रिटिश साम्राज्य के प्रति निष्ठा थी और इसलिए उसकी आलोचना सुनना उन्हें पसंद नहीं था। मैडम कामा अंग्रेजों को उखाड़ फैंकने के लिए कटिबद्ध थीं। इन्हीं विरोधाभासी विचारों के कारण दोनों में ठनने लगी और वैवाहिक जीवन की परिणति यह हुई कि दोनों में बोलचाल भी बंद हो गयी।

उन्हीं दिनों बम्बई में प्लेग की बीमारी फैली। यह बीमारी छूत की तरह फैलती है और सभी लोग इससे भाग खड़े होते थे किन्तु मैडम कामा ने इस चुनौती को स्वीकार किया और दीन-हीन की सेवा सुश्रुषा में स्वयं को समर्पित कर दिया। प्लेग के रोगियों की अथक सेवा करतीं, उन्हें ढांढस बँधाती और कहतीं कि उनका जीवन देश का जीवन है। सेवा करते-करते वे स्वयं उसकी शिकार हो गयीं। मृत्यु से तो वह बच गयीं किन्तु स्वास्थ्य काफी गिर गया। इसी उपचार के लिए अप्रैल 1901 में उन्हें यूरोप भेज दिया गया। जर्मनी, फ्रांस, स्काटलैंड आदि देशों में एक-एक वर्ष रहकर 1905 में मदाम कामा लंदन पहुँच गयीं। वहाँ उन्होंने प्रसिद्ध कांग्रेसी नेता दादाभाई नौरोजी के निजी सचिव के रूप में कार्य किया। धीरे-धीरे उनका संबंध श्याम जी कृष्ण वर्मा, सरदार सिंह राणा और विनायक दामोदर सावरकर जैसे महान क्रांतिकारियों के साथ आया। श्यामजी कृष्ण वर्मा की पत्रिका 'दि इंडियन सोशियोलाजिस्ट" में उनके लेख प्रकाशित होने लगे और श्री वर्मा द्वारा स्थापित 'इंडियन होमरूल सोसाइटी' में काम कर वे अपना सारा समय लगाती थीं।

क्रांतिकारी गतिविधियों के विरोध स्वरूप 'ब्रिटिश सरकार की दमनकारी नीतियों के फलस्वरूप मदाम कामा श्यामजी कृष्ण वर्मा के साथ लंदन छोड़कर फ्रांस चली गयीं। फ्रांस में रहकर पेरिस से क्रांति की ज्वाला को प्रज्जवलित रखा। लाला हरदयाल को भी ब्रिटेन से निष्कासित कर दिया, सरदार सिंह राणा पहले से ही फ्रांस में थे, सावरकर भी लंदन छोड़कर फ्रांस

आ गए। फ्रांस अब भारतीय क्रांतिकारियों का गढ़ हो गया।

फ्रांस से सन् 1907 में जर्मनी के स्टुटगार्ट नगर के अंतर्राष्ट्रीय समाजवादी सम्मेलन में पहुँची जहाँ ललकारते हुए ब्रिटिश साम्राज्यवाद की भर्त्सना की और वह भाषण समाजवादी व्यवस्था का अंग बन गया।

जैसे विवेकानंद ने अमेरिका में भारत के गौरव का डंका बजाया था उसी प्रकार मदाम कामा ने अमेरिका में भारतीय स्वातंत्र्य संग्राम का बिगुल फूँका। महान क्रांतिकारी मौलवी बरकुतल्ला ने भी उनके भाषणों का भरपूर लुत्फ उठाया। न्यूयार्क के प्रेस रिपोर्टरों से साक्षात्कार के समय भीकाजी कामा ने कहा कि भारत के लोग यद्यपि भूखे और अनपढ़ हैं, पर उनमें आजादी की भूख कहीं अधिक है। 28 अक्टूबर 1907 को मिनर्वा क्लब द्वारा वालफोर्ड एस्टोरिया होटल में आयोजित कार्यक्रम में उन्होंने कहा कि आप लोग रूस के बारे में तो बहुत कुछ जानते हैं लेकिन भारत के बारे कुछ नहीं जानते। अंग्रेज लोग भारत के लोगों का खून चूसकर भी प्रचारित कर रहा है कि भारत के लोग बहुत सुखी हैं और वे स्वाधीनता नहीं चाहते। आप सबसे निवदेन है कि भारत की स्वाधीनता के लिए सहयोग करें।

अमेरिका में धुआँधार प्रचार के बाद वे पुनः लंदन पहुँची। वह यह बखूबी जानती थीं कि लंदन में गिरफ्तारी के साथ-साथ उनकी जान को भी खतरा है किन्तु वहाँ निर्वासित होकर आए कांग्रेस के दिग्गज नेताओं से वे भारत के समाचारों के बारे में जानकारी लेनी चाहती थीं। उन्हें यह जानकर अपार प्रसन्नता हुई कि 1907 में सूरत में सम्पन्न कांग्रेस अधिवेशन में गरम दल के लोगों का प्रभाव दिनों-दिन बढ़ रहा है। लंदन के कैक्सटन हाल में एक सम्मेलन आयोजित हुआ जिसमें लाला लाजपत राय, विपिन चंद्रपाल, खापेर्ट, गोकुलचंद नारंग और आगा खाँ जैसे दिग्गज नेता उपस्थित थे किन्तु सबसे अधिक प्रभावशाली और ओजस्वी भाषण मदाम कामा का ही था। उन्होंने कहा कि स्वाधीनता के लिए अंग्रेजों को भारत से खदेड़ना कोई हिंसा नहीं है क्योंकि हिंसक से निबटने के लिए केवल यही मार्ग है। शेर की माँद में घुसकर शेर को ललकार रही थी और उनका एक ही संदेश था "देश के लिए

मर मिटना ही हमारे जीवन का उद्देश्य है- उसमें कष्ट और बाधाएँ तो आयेंगी ही, उनको चीरकर हम आगे बढेंगे। हम भारत के हैं और भारत हमारे लिए है।"

सन् 1908 में इंडिया हाउस में भारत के स्वतंत्रता संग्राम के 50 वर्ष होने पर एक कार्यक्रम किया गया जिसके लिए धन एकत्रित करने का काम मदाम कामा को सौंपा गया और हर प्रकार के क्रांतिकारी साहित्य को प्रकाशित कराने और वितरित करने के काम को भी उन्होंने बखूबी अंजाम दिया। यहाँ तक कि "भारतीय स्वतंत्रता संग्राम-1857" को भी प्रकाशित कराया और गोपनीय ढंग से वितरण कर सभी देशों में उसकी प्रतियाँ भेजीं।

1 मई सन 1909 को पुनः पेरिस पहुँच गयीं जहाँ से उन्होंने "वंदेमातरम' समाचारपत्र का प्रकाशन शुरू किया। इसके लिए उन्हें बहुत परिश्रम करना पड़ा। बाद में उसके अंक जनवरी से अगस्त 1910 तक जिनेवा से प्रकाशित किए गए और अंततः वहाँ से भी हटाकर हालैंड ले जाना पड़ा।

महिलाएँ भी राजनीति में भाग लेकर आगे आएँ, यह उनका आह्वान था। मिस्र.में बोलते हुए उन्होंने कहा कि "मैं मिस्र का केवल आधे प्रतिशत को ही देख पा रही हूँ। मैं मिस्र के सपूतों से पूछना चाहती हूँ कि आपकी माताएँ कहाँ है- बहने कहाँ हैं। आपको यह भी याद दिलाना होगा कि पालना झुलाने वाले हाथ ही देश का संचालन करने वाले व्यक्तियों का निर्माण करते हैं।

वीर सावरकर जब जहाज से कूदे तो फ्रांस तट से उन्हें बचा ले जाने की योजना मदाम कामा और श्याम जी कृष्ण वर्मा की थी किन्तु योजना विफल हो गयी क्योंकि जहाज समय से बहुत पहले ही फ्रांस तट पर पहुँच गया था और सावरकर पुनः गिरफ्तार कर लिए गए। हेग की अंतर्राष्ट्रीय अदालत में पहुँचकर सावरकर को छुड़ाने का अनेक प्रकार से यत्न किया किन्तु यहाँ भी वे सफल न हो सकीं।

क्रांतिकारी युवक कान्हरे ने 21 दिसंबर 1909 को नासिक के कलेक्टर मि. जैक्सन की हत्या कर दी और इसी प्रकार क्रांतिकारी वांची अय्यर ने टिन्नेवेली के न्यायाधीश मि.ऐश की हत्या कर दी। इन हत्यायों में प्रयुक्त पिस्तौल ब्राउनिंग माडल की थीं और ऐसी 20 पिस्तौलें भारत भेजीं गयीं थीं।

जिनकी खरीद के लिए पैसों की व्यवस्था मदाम कामा ने ही की थी और पिस्तौलें भेजने की सारी जिम्मेदारी सरदार सिंह राणा और वीर सावरकर के स्थान पर स्वयं अपने ऊपर ले ली।

मदनलाल धींगरा को वह अपने बेटे जैसा मानती थीं, उसे फाँसी लगने के बाद वह पागलों जैसी हो गयीं थीं। भारत के डा. अविनाश भट्टाचार्य सन 1913 में मदाम कामा से मिलने फ्रांस गए और मिलने पर जैसे ही मदनलाल धींगरा का नाम आया तो उनकी आँखों से झर-झर आँसू टपकने लगे।

सन 1914 के प्रथम विश्व युद्ध के समय फ्रांस और इंग्लैण्ड मित्र देश थे। अब मदाम कामा की गतिविधियों पर नजर रखी जा रही थी और कतिपय पाबंदी लगाने के बाद पेरिस से हटाकर विशी नामक स्थान पर एक पुराने किले में उन्हें नजरबंद कर दिया गया और चार साल तक नजरबंदी की स्थिति में रखा गया। युद्ध की समाप्ति पर उन्हें छोड़ तो अवश्य दिया गया किन्तु उनका स्वास्थ्य काफी गिर गया था। उनका शरीर सूख कर जर्जर हो गया था, सरदार सिंह राणा यह देखकर रो पड़े। मदाम कामा ने मातृभूमि के लिए जलयान द्वारा प्रस्थान किया, आयु भी लगभग 70 के आसपास थी। भारत पहुँचते ही उन्हें अस्पताल की शरण लेनी पड़ी। शरीर जर्जर हो गया था और आठ महीने के अन्तराल के बाद अस्पताल में ही 16 अगस्त 1936 को उनकी इह लीला समाप्त हो गयी और वे चिर निद्रा में विलीन हो गयीं।

यद्यपि यह सत्य है कि उनकी मृत्यु फाँसी अथवा गोली लगने से नहीं हुई किन्तु स्वाधीनता संग्राम में उनकी शहादत अतुलनीय है जिसपर प्रत्येक भारतवासी को गर्व है। ऐसी वीरांगना को शत्-शत् नमन। ○○

8

मैना

बिठूर का किला- नाना साहब पेशवा का राजमहल- उनकी पुत्री मैना निर्भीक एवं साहसी- नाना साहब से परस्पर वार्तालाप। चिंता निमग्न नाना साहब पेशवा बोले-अब अंग्रेजों का विजयक्रम आरंभ हो चुका है। हमारी सेना भी छिन्न-भिन्न हो चुकी है, उसे पुनः संगठित कर एक और मोर्चा लेना आवश्यक हो गया है इसलिए अब बिठूर छोड़ना ही पड़ेगा किन्तु तुम्हें छोड़कर जाना मेरी आत्मा को स्वीकार नहीं है। तुम मेरे साथ चलो और यह महल किसी सेवक की देखरेख में हम छोड़ सकते हैं।

"पिता जी! यह महल किसी सेवक की देखरेख में छोड़ें अथवा सूना छोड़ दें- इसमें क्या अंतर है। यहाँ पर रहकर समय-समय पर जो सूचनाएँ हम अपने क्रांतिकारियों को देते रहे हैं- वह काम एक सेवक नहीं कर सकता- इसलिए मेरा ही यहाँ रहना सम्यक् होगा और मेरी तरफ से आप बिल्कुल भी बिचलित न हों।

"पर बेटी! अंग्रेजों में मानवता नाम की कोई चीज नहीं है- वे तो पशु हैं और पशुवत ही व्यवहार करते हैं- इसलिए तुम्हारा यहाँ रहना खतरे से खाली नहीं है।"

पिताजी! यह ठीक है कि मैं अपने प्राणों की रक्षा करने में सक्षम न हो पाऊँ किन्तु अपने सम्मान की रक्षा करना तो मैंने आपसे ही सीखा है। इसलिए निःसंकोच जाइए।

"'बेटी! तुम्हें मेरा गंतव्य तो ज्ञात ही है।"

पिताजी! आपके गंतव्य से मैं भली-भाँति परिचित हूँ। मैं ईश्वर से यही प्रार्थना करती रहूँगी कि वे आपको इस काम में सफलता प्रदान करें।

बेटी से बिदा लेकर नानासाहब चले गए। बिठूर के राजमहल में मैना अकेली रह गई, साथ में थे कुछ सेवक।

गुप्तचरों की सूचना के आधार पर कि मैना राजमहल में अकेली है, अंग्रेज सेनापति मिस्टर हे ने राजमहल पर छापा मार सेवकों को कैद कर लिया। किन्तु मैना उनके हाथ न आ सकी। सेनापति ने राजमहल को गोलों की तोपों से गिरा देने का फैसला किया। जैसे ही मिस्टर हे ने तोपें चलाने का आदेश दिया वैसे ही मैना एक झरोखे से प्रकट होकर कड़कती आवाज में बोल उठी।

"रुको! बंद करो यह अपना दुष्कृत्य।"

आवाज सुनते ही सेनापति स्तब्ध रह गया और बोला-"हमने महल का चप्पा-चप्पा, कोना-कोना छान मारा था तब तो तुम कहीं मिली नहीं- अब अचानक कहाँ से आ टपकीं।"

एक सैनिक कहने लगा कि हुजूर यह लड़की कहीं से टपकी नहीं लगती, यह धरती फाड़कर निकली है।

"हाँ, मैं धरती की बेटी हूँ" मैना ने उत्तर में कहा, अब सेनापति और मैना आमने-सामने थे। वार्ता कुछ इस प्रकार थी.....

"लड़की, तेरी क्या इच्छा है"

"मैं चाहती हूँ कि यह महल गिराया न जाये।"

"इसको बचाने में तुम्हारा क्या उद्देश्य है।"

"आप ही बताएँ कि इसे आप क्यों गिराना चाहते हैं?

"यह महल गंभीर अपराधी नानासाहब का है- वह विद्रोही क्रांतिकारी है। ब्रिटिश सरकार ने इसे ध्वस्त करने की आज्ञा दी है।"

अजीब बात है, नुकसान नाना साहब ने किया है या इस महल ने। इस जड़ पदार्थ भवन से उनका बदला लेना, क्या यही है आपकी वीरता?"

"युद्ध के समय आदर्श नहीं देखा जाता–केवल विध्वंस ही होता है।"

"लगता है मिस्टर हे केवल सेनापति हैं। एक इंसान नहीं इसलिए उनसे इंसानियत की कल्पना भी नहीं की जा सकती।"

सेनापति बोला, अरे! तुम्हें तो मेरा नाम भी पता है, कैसे पता लगा मेरा नाम!"

"श्रीमन्, आप मेरे पिता के दरबार में आया करते थे। मैं नानासाहब की पुत्री मैना हूँ। आपकी पुत्री से मेरी बहुत घनिष्ठता रही है।

"हाँ–हाँ, अब तुम्हें पहचान गया। तुम मेरी पुत्री 'मेरी' की सहेली हो। जब मेरी पुत्री की मृत्यु हुई थी, तब तुमने उसके शोक में दो दिन तक खाना नहीं खाया था।"

"तब मैंने आपका मानवीय रूप देखा था, इसीलिए महल न गिराने का अनुरोध आपसे कर रही हूँ।"

"सहायता करना संभव नहीं जान पड़ता क्योंकि कंपनी सरकार की आज्ञा का पालन तो करना ही है।"

इन दोनों की बातचीत के दौरान प्रधान सेनापति जनरल आउटरम भी वहाँ पहुँच गए। वह आश्वस्त था कि अब तक महल गिर चुका होगा किन्तु यहाँ आकर आश्चर्य हुआ कि महल अभी तक गिरा नहीं था। उसने पूछा कि "अभी तक महल क्यों नहीं गिराया गया।"

"नाना साहब की पुत्री मैना इसे न गिराने का अनुरोध कर रही है।"

"इस लड़की के प्रति आपके मन में दया का भाव क्यों है"

'यह मेरी पुत्री 'मेरी' की अभिन्न सहेली रही है।"

"जनरल आउटरम ने कहा कि इस सब बातों में मेरी तनिक भी दिलचस्पी नहीं है।"

सेनापति 'हे' ने पूछा कि नानासाहब का महल किसी प्रकार बच सकता है क्या?

"इसके लिए गवर्नर जनरल की आज्ञा लेनी होगी।"

क्यों न गवर्नर जनरल लार्ड केनिंग से तार द्वारा न गिराने की अनुमति ले ली जाये- ऐसा सेनापति ने कहा-

"जनरल आउटरम बोले कदापि भी नहीं, इस प्रस्ताव से मैं बिल्कुल सहमत नहीं हूँ।"

जनरल आउटरम की आज्ञा से महल की तलाशी ली गई किन्तु मैना का कहीं अता पता नहीं लगा। तोपें दागी गयीं और आनन-फानन में महल ध्वस्त हो गया। आउटरम ने यह समझ लिया कि लड़की महल के नीचे दबकर मर गई होगी। वह वहाँ से चला गया।

मैना तलघर से प्रकट होकर स्वयं गिरे हुए महल को, उस महल की आभा को ध्वस्त होते हुए उस चांदनी रात में देख रही थी लेकिन मैना को दो अंग्रेज सैनिकों ने देख लिया था। उस पर झपटे और उसे गिरफ्तार कर जनरल आउटरम के सामने पेश किया।

आउटरम बोला "अन्ततोगत्वा तुम हमारे जाल में फँस ही गयीं। अब अच्छा यही होगा कि तुम नानासाहेब तथा अन्य क्रांतिकारियों के ठिकाने इत्यादि बता दो अन्यथा तुम्हें जिन्दा जला दिया जायेगा। परिणाम भुगतने के लिए तैयार रहो।

"मैना बोली' जलाने पर तो मेरा शरीर ही तो जलेगा, मेरी आत्मा, जो अजर-अमर है, कभी नहीं जल सकती। अग्नि में भस्मी-भूत हो जाऊँगी लेकिन कोई भी भेद नहीं बताऊँगी।"

"ऐ लड़की, जिद्द मत करो- भेद बता दो तुम्हारी जान भी बख्श दी जायेगी और भारी पुरस्कार भी तुम्हें प्रदान किया जायेगा।"

"बलिदान ही मेरा पुरस्कार है। न मुझे मृत्यु से भय है और न ही किसी प्रलोभन की चाहना। मुझे किसी भी प्रकार से विचलित नहीं किया जा सकता। मेरी मृत्यु ब्रिटिश शासन के पतन का कारण होगा-यह मैं सगर्व कह रही हूँ।"

ब्रिटिश शासन के पतन की बात सुनकर आउटरम तिलमिलाया और गुस्से में बोला, इसे पेड़ से बाँध दो और पेड़ में आग लगा दो। जनरल की आज्ञा का पालन किया गया। लपटें उठने लगीं- शरीर स्वाहा हो गया, पर कोई चीत्कार नहीं। आभा और चमक उन लपटों में विलीन हो गयी और बच रही उस तेजपुंज अमर सेनानी की शौर्य गाथा। यही है भारतीय नारी का चमत्कारिक चरित्र। उसकी याद में हम सबकी आँखें नम हैं। ○○

9

सावित्री देवी

दो लोग आए और कहने लगे कि 'माँ! हम आपका आतिथ्य स्वीकार करने में असमर्थ हैं। कारण, क्रांतिकारियों को प्रश्रय देने का अर्थ है- अपने ऊपर आफत मोल लेना, वेइन्तहा कठिनाईयाँ उन्हें झेलनी पड़ सकती हैं।

"तुम्हारा यह कहना ठीक है किन्तु तुम लोग जो कठिनाइयाँ झेल रहे हो, देश को स्वतंत्र कराने के लिए अनेक यातनाएँ सह रहे हो, वह सब अपने लिए कर रहे हो क्या?"

"नहीं माँ। यह सब तो अपने देश और देशवासियों के लिए ही कर रहे हैं।"

"तो फिर देशवासियों का भी कुछ तो कर्तव्य बनता ही है। प्रश्न सूचक दृष्टि से देखते हुए सावित्री ने गर्व के साथ कहा।"

"है क्यों नही माँ? भाई साहब के निधन के उपरान्त आप घर में अकेली हैं, साथ में है आपके ऊपर दो बच्चों का भार।"

"आप लोगों को भगवान पर विश्वास है न।

वही सबका आश्रयदाता है। मेरे लाल! घर पर आए हुए बच्चे भूखे चले जाएँ, इससे बड़ा दु:ख एक माँ को और क्या होगा, सावित्री ने क्रांतिकारी सूर्यसेन और निर्मलसेन को समझाते हुए कहा।"

अब दोनों क्रांतिकारी सावित्री देवी के सामने नतमस्तक हो गए और

सहर्ष दोनों ने उनका आतिथ्य स्वीकार कर लिया।

सावित्री देवी घलघाट गाँव में रहती थीं, उनका दो मंजिला मकान था और ऊपर के कमरे में सूर्य सेन और उनके क्रांतिकारी साथियों को भोजन कराने ले गई। 14 सितंबर 1932 को रात्रि के नौ बजे का समय, भोजन समाप्त कर सब लोग बैठे ही थे कि छोटी बालिका दौड़ती हुई आई और हाँफते हुए बोली कि बाहर गली में पुलिस वाले घूम रहे हैं। सभी क्रांतिकारी स्तब्ध, अभी कुछ सोच ही रहे थे कि एक हवलदार के साथ कैप्टन कामरूं सीढ़ियों पर चढ़ता हुआ दिखाई पड़ा। हवलदार आगे था, उसके पीछे कैप्टन था। क्रांतिकारी अपूर्व सेन नीचे उतर रहा था और उसने हवलदार को जोरदार धक्का दिया, वह धड़ाम से नीचे जा गिरा। सूर्यसेन ने कैप्टेन पर गोली दाग दी, वह भी नीचे गिर गया। इस अफरातफरी का लाभ उठाकर सूर्यसेन और महिला क्रांतिकारी प्रीतिलता वादेदार कूदकर भाग गए। अपूर्व सेन भी भागने की कोशिश में था किन्तु अन्य सैनिकों ने उसे अपनी गोली का शिकार बनाया और उसने घटना स्थल पर ही दम तोड़ दिया।

अंदर घिरे क्रांतिकारी निर्मल सेन भी खिड़की से कूदकर भागने की चेष्टा में गोली के शिकार हो गए और वह अन्दर चला गया। सैनिक खिड़की के रास्ते से गोलियाँ दाग रहे थे किन्तु अन्दर जाने का साहस नहीं कर पा रहे थे। मकान को चारों तरफ से घेर कर उस पर तगड़ा पहरा बिठा हवलदार ने पास के पुलिस थाने से कुमुक की और टुकड़ी लाने के लिए सैनिक को भेजा। कुमुक आते ही सैनिकों ने गोलियाँ दागने की झड़ी लगा दी किन्तु जवाब में अन्दर से कोई गोली नहीं आई। सैनिकों ने छुपते-छिपाते कमरे के अन्दर झांका तो उन्हें एक शव दिखाई पड़ा और यह शव निर्मलसेन का था। वे उस शव को उठा ले गए।

क्रांतिकारियों को प्रश्रय देने के फलस्वरूप सावित्री देवी, उनके पुत्र तथा अन्य दो व्यक्तियों को गिरफ्त में ले उन पर मुकदमा चलाया गया और सभी को चार-चार साल के कठोर कारावास का दंड दिया गया। सावित्री देवी को अपने दंड का दुःख नहीं था, दुःख था तो केवल इस बात का कि उनके घर में क्रांतिकारी मारे गए। ○○

10

दीदी सुशीला मोहन

पंजाब विश्वविद्यालय की परीक्षाएँ 8 अप्रैल 1927 को जालंधर के कन्या विद्यालय में चल रही थीं। परीक्षार्थी छात्राओं ने अपना स्थान ग्रहण कर लिया था। प्रश्नपत्र आने ही वाला था। तब तक एक निरीक्षक ने उस दिन का अखबार निकाला- मुख पृष्ठ पर छपा था राम प्रसाद विस्मिल, रोशनसिंह और राजेन्द्र लाहिणी को फाँसी।

एक परीक्षार्थी छात्रा ने भी शीर्षक पढ़ा और पढ़ते ही सदमे के कारण बहोश हो गयी, उसे दूसरे कमरे में ले जाया गया और दो घंटे के बाद होश में आयी, फलस्वरूप वह परीक्षा न दे सकी।

काकोरी में संलिप्त इन वीर क्रांतिकारियों को फाँसी की सजा सुनाई गई थी, और समाचार पढ़ने के बाद जो छात्रा बेहोश हुयी थी, उसका नाम था सुशीला मोहन। वह बी.ए. अंतिम वर्ष की परीक्षा दे रही थी, सुशीला राष्ट्रीय विचारों से ओत-प्रोत थी, उसकी राष्ट्रीय विचारों की कविताएँ बड़े उन्मुक्त भाव से सुनीं जाती थीं। सुशीला सेना से अवकाशप्राप्त डा. करमचंद की पुत्री थी, उसका जन्म 5 मार्च 1905 को पंजाब के गुजरात जिले के 'दंतो-चूहड़' गाँव में हुआ था, उसके चाचा भी डाक्टर थे। सारा परिवार आर्यसमाजी और राष्ट्रीय विचारों का था। यह कहना उचित ही होगा कि राष्ट्रीयता उसे विरासत में मिली थी।

कालेज में अध्ययनरत सुशीला को देहरादून में सन् 1926 में आयोजित हिन्दी साहित्य सम्मेलन के लिए आमंत्रण मिला, सार्वजनिक सम्मेलन में कविता पाठ का उनका यह पहला कार्यक्रम था, कविता सुनकर श्रोता मंत्र मुग्ध हो गए। कार्यक्रम के दो ही आकर्षण थे, एक भगवती चरण का भाषण और दूसरा कु. सुशीला का काव्य पाठ। दोनों का परस्पर परिचय वहीं हुआ। भगवती चरण अपने कालेज का एक मेधावी छात्र था, क्रांतिकारी इतिहास पढ़ने की उनको काफी रुचि थी। भगवती चरण को एक बहन और सुशीला को एक भाई मिल गया। फिर मिलेंगे कहकर वे देहरादून से विदा हुए।

प्रसिद्ध क्रांतिकारी शचीन्द्रनाथ सान्याल ने 'हिन्दुस्थान प्रजातंत्र संघ' की स्थापना की थी। इस संघ की लाहौर शाखा के संचालक थे प्रो. जयचंद विद्यालंकार। उनके कुछ छात्र क्रांतिकारी दल के सदस्य बन गए थे जिनमें प्रमुख थे, भगवती चरण, भगतसिंह, सुखदेव और यशपाल।

क्रांतिकारी साहित्य का वितरण किया जाना था, यह काम बड़ा गोपनीय और विश्वास का था। भगवती चरण अपनी पत्नी दुर्गादेवी के साथ कु. सुशीला के पास पहुँच गए। सुशीला मोहन के लिए इस प्रकार का कार्य करने के लिए यह पहला अवसर था जिसे उन्होंने सहर्ष स्वीकार कर लिया। जालंधर में परचे बाँटने की बहुत सुन्दर योजना बनाई और एक ही दिन में गोपनीय परचे सब ठिकानों पर पहुँच जाते थे। बड़े-बड़े अफसरों के पास परचा डाक द्वारा भेजा गया। इस योजना से तहलका मच गया और खोज-खबर करने के बाद भी पुलिस को कोई सुराग नहीं मिला।

अपनी स्नातकीय परीक्षा पास करने के उपरांत सुशीला अपने ही महाविद्यालय में पढ़ाने लगीं और गोपनीय रूप से क्रांतिकारी पार्टी का काम भी करती रहीं। उनका लाहौर आना जाना बना ही रहता था और लाहौर में वह भगवती चरण के परिवार में ही ठहरती थीं। ग्वालमंडी स्थित भगवती चरण का आवास क्रांतिकारियों का केन्द्र बन गया था।

बाद में सुशीला जी कुछ समय के लिए जालन्धर से कलकता चली गई। वहाँ पर नामी व्यापारी सेठ छाजूराम के यहाँ ठहरीं। उन्हें भी अपनी पुत्री

को पढ़ाने के लिए एक संस्कारित एवं शिक्षित महिला की आवश्यकता थी। जालंधर कन्या महाविद्यालय के संचालक लाला देवराज के माध्ययम् से यह कार्य संभव हुआ। सुशीला ने पढ़ाने का यह दायित्व बड़ी कुशलता से निभाया। देखते-देखते कलकत्ता के अन्य सेठ भी उसकी अथवा उसकी जैसी महिला की माँग अपनी-अपनी पुत्रियों को पढ़ाने के लिए करने लगे।

यह बड़ा संयोग ही है कि यहाँ पर सुशीला का परिचय बंगाल के प्रसिद्ध क्रांतिकारी सुभाष चंद्र बोस से हो गया। साइमन कमीशन के विरोध में जुलूस निकालने वालों का नेतृत्व सुभाषचंद्र बोस कर रहे थे- उस समय वे कलकत्ता कांग्रेस कमेटी के प्रदेश अध्यक्ष थे। जुलूस निकलते समय रास्ते में तीन बहनें उसमें सम्मिलित हो गईं। सुशीला के हाथ में तिरंगा झंडा था और शेष दो कौशल्या व सुभद्रा के हाथ में एक बैनर था जिस पर लिखा था "साइमन वापस जाओ।" सुभाष चंद्र बोस ने हाथ में तिरंगा थामे सुशीला को आगे कर दिया, बाकी सब उसके पीछे। सुशीला नारा लगाती 'साइमन' शेष सभी कहते 'वापस जाओ'। सुभाष चंद्र बोस की खुशी का ठिकाना न रहा और वह स्वयं भी पीछे चलने लगे। सुभाष चंद्र बोस का वरद् हस्त सुशीला मोहन को प्राप्त हो गया।

भगतसिंह और चंद्रशेखर आजाद जब एक साथ मिले तो क्रांतिकारी आंदोलन को जैसे पंख लग गए हों। अब दल का नाम बदलकर 'हिन्दुस्तान समाजवादी प्रजातंत्र संघ' रख दिया गया और इस संघ के सर्वेसर्वा बन गए चंद्रशेखर आजाद।

भगवती चरण मेरठ से भागकर कलकत्ता आ गए और वह सुशीला के पास ही ठहरे। यद्यपि भगवती चरण वहाँ अधिक ठहरने के पक्ष में नहीं थे किन्तु सुशीला के आग्रह पर उन्होंने वहाँ ठहरना स्वीकार कर लिया। क्रांतिकारियों के लिए वह स्थान भी काफी सुरक्षित था।

कुछ दिन के बाद एक तार मिला कि मैं भाई के साथ कलकत्ता पहुँच रही हूँ। नीचे लिखा था 'दुर्गा'। सुशीला कुछ समझी नहीं। तार लखनऊ से आया था। दोनों कलकत्ता स्टेशन पहुँच गए जैसे ही प्लेटफार्म पर गाड़ी

आकर रुकी तो भगवती चरण ने अपनी पत्नी और बच्चे शचीन्द्र के साथ यूरोपियन वेश में आए भगतसिंह को पहचान लिया। लाला लाजपतराय के हत्यारे पुलिस ऑफीसर सांडर्स को गोलियों से भूनने वाले भगतसिंह ही हैं- ऐसा वे सब जानते थे।

क्रांतिकारी सूझ बूझ अब सुशीला को बहुत हो गयी इसलिए उसने भगवती-चरण, दुर्गा भाभी तथा भगतसिंह को दो एक दिन के लिए होटल में ठहरा दिया, बाद में मकान मालकिन लक्ष्मी देवी को विश्वास में लेकर अपने साथ ही घर पर बुला लिया। कुछ दिन बाद भगवती चरण तथा दुर्गा भाभी लाहौर चले गए और भगतसिंह कलकत्ता में ही रहे।

एक दिन सर छाजूराम के मकान को पुलिस ने घेर लिया। यह एक संकट का समय था। उस समय भगतसिंह ने पिस्तौल लेकर किवाड़ की ओट में खड़े होकर सुशीला दीदी को दूसरे कमरे में जाने को कहा किन्तु पुलिस स्वामी भवानी दयाल को गिरफ्तार कर वापस चली गई। इस प्रकार संकट टल गया और भगतसिंह कुछ दिन और रहकर वहाँ से चले गए।

अब लाहौर के क्रांतिकारी साथियों की ओर से सुशीला को संदेश आया कि वहाँ का सब काम छोड़कर लाहौर वापस आ जाओ। वे तुरंत लाहौर पहुँच गयी और दुर्गा भाभी के पास जाकर ठहरीं।

दिल्ली असेम्बली बम कांड के लिए भगतसिंह और बटुकेश्वर दत्त को विदाई देने सुशीला दीदी और दुर्गा भाभी दोनों दिल्ली पहुँच गए। सुशीला दीदी ने रसगुल्ले और दुर्गा-भाभी ने संतरे छील-छीलकर उन दोनों को खिलाए। जब वे बम कांड के लिए चलने लगे तो सुशीला दीदी और दुर्गा भाभी ने अपनी अपनी बाजुओं में चाकू से कट लगाया और निकलते रुधिर से भगतसिंह और बटुकेश्वर दत्त का तिलक किया।

अब धन की आवश्यकता महसूस होने लगी तो सुशीला दीदी ने कलकत्ता जाकर एक नाटक 'मेवाड़ पतन' कर काफी धन एकत्रित किया तथा भगतसिंह डिफेंस कमेटी' को सौंप दिया। दस तोले की अपनी सोने की चूडियाँ क्रांतिकारी योगेशचन्द्र चटर्जी को छुड़ाने के लिए वह पहले ही दे चुकीं थीं।

सुशीला भी बम बनाना सीखना चाहती थीं किन्तु भगवती चरण ने कहा कि कश्मीर बिल्डिंग में जो फैक्टरी खोली गई है, उसमें केवल पुरुष काम करते हैं और किसी लड़की का काम करना अनावश्यक रूप से संदेह पैदा करेगा। सुशीला दीदी ने सिख लड़के का वेश बनाकर फैक्टरी में बम बनाने का अभ्यास लिया किन्तु यह काम अधिक दिन तक न चल सका। कारण चोटी बाँधकर वहाँ जाना और आकर क्रांतिकारी साथियों की सेवा करना, यह सब दुष्कर था।

भगवती चरण ने स्वयं को एक इंजीनियरिंग फर्म का प्रतिनिधि बताकर अपने कुछ साथियों को भागीदार और कुछ को नौकर बताकर सुशीला दीदी और दुर्गा भाभी के साथ वे बहावल रोड पर कोठी नं 9, के आधे भाग में रह रहे थे। भगतसिंह को छुड़ाने की योजना बनी किन्तु दुर्भाग्य से बम विस्फोट के कारण भगवती चरण की 28 मई 1930 को मृत्यु हो गई।

1 जून 1930 को भगतसिंह और दत्त को छुड़ाने के लिए जाने वाले दल को सुशीला दीदी और दुर्गा भाभी ने रक्त तिलक लगाकर विदा किया था लेकिन भगतसिंह का विचार बदल जाने के कारण योजना विफल हो गई। एक-दो दिन बाद कमरे में रखे बमों का विस्फोट हो गया और सभी क्रांतिकारियों को वहाँ से हटना पड़ा।

सुशीला दीदी दुर्गा भाभी को लेकर अपनी सहेली सत्यवती के पास गईं। उसे सारी स्थिति बता दी, सत्यवती ने अपने पति श्री अचिंत्यराम से उनके आश्रय के लिए कहा। अचिंत्यराम ने कहा कि इसमें मेरी अनुमति की क्या बात है, यह तुम स्वयं भी कर सकती हो। मुसीबत में ही तो मित्र की परीक्षा होती है। उन दोनों के फलस्वरूप ही सुशीला दीदी और दुर्गा भाभी कुछ दिन वहाँ रहे। बाद में चन्द्र शेखर आजाद ने उन्हें दिल्ली भेज दिया।

सहसा सुशीला को प्रसिद्ध वकील श्याम मोहन के साथ परिचय का संदर्भ ध्यान में आया और उनके द्वारा ही दिए हुए पते को खोज निकाला, क्रांतिकारियों के लिए वह मकान बहुत सुरक्षित था। इतना सुरक्षित कि चन्द्रशेखर आजाद हथियार इत्यादि वहाँ रखने लग गए और वकील साहब

स्वयं हथियारों को इधर-उधर ले जाने में भी सहायक हुए। वह एक बार हथियार लेकर लाहौर गए किन्तु दिल्ली पुलिस को इसकी भनक लग गई और वह उन्हें गिरफ्तार करने लाहौर पहुँच गयी, वकील साहब ने अपने परिचित मित्र के माध्यम से सामान बाहर निकलवा दिया और जब पुलिस ने उनकी तलाशी ली तो उनसे पुलिस को कुछ भी नहीं मिला और उधर सामान भी लाहौर पहुँच गया।

आजाद ने दिल्ली में बम बनाने का एक कारखाना खोल दिया। दीदी सुशीला मोहन भी बम बनाने के काम में हाथ बँटाने लगीं।

उन दिनों क्रांतिकारियों का मुख्य केन्द्र कानपुर था। महिला क्रांतिकारियों को भी सभी स्थानों से परिचित करा दिया जाये इसलिए सुशीला और दुर्गा भाभी को वहीं बुला लिया गया और वहाँ से उन्हें इलाहाबाद केन्द्र ले जाया गया। इलाहाबाद में वे पुरुषोत्तम दास टंडन के यहाँ रुकीं। टंडन जी दोनों को पुत्रियों की भाँति स्नेह देते थे। उपरान्त "चांद कार्यालय" के संचालक श्री रामरख सहगल ने मातृ-मंदिर की स्थापना कर दीदी सुशीला और दुर्गा भाभी को उसका व्यवस्थापक बना दिया।

एक दिन आजाद ने सुशीला से पूछा कि तुम लाहौर जाकर भगतसिंह से भेंट करके आ सकती हो क्या? काम मुश्किल है किन्तु क्रांतिकारी सूझ बूझ के कारण मैं तुम पर विश्वास करता हूँ। सुशीला ने यह दायित्व स्वीकार कर लिया और भगतसिंह की रिश्तेदार बनकर कई बार उनसे जेल में मुलाकात की। एक बार पुलिस को भनक लग गई किन्तु पुलिस के पहुँचने से पहले ही सुशीला वहाँ से जा चुकी थी। इलाहाबाद वापस आकर बताया कि भगतसिंह नहीं चाहते कि उन्हें बचाया जाये।

लार्ड इरविन, जो वायसराय थे, की गांधी जी के साथ संधिवार्ता से पहले तुम दोनों गांधी जी से कहो कि वे वायसराय के सामने यह प्रस्ताव रखें कि क्रांतिकारियों की सजा माफ कर दी जाये और फाँसी की सजा उमर कैद में तब्दील कर दी जाये। कांग्रेसी कार्यकर्त्ता श्री रघुनंदन शरण ने गांधी जी से कहा कि मैं स्वयं लार्ड इरविन को समझाने का प्रयत्न करूँगा किन्तु उस

बातचीत में भगतसिंह का नाम नहीं लूँगा।

एल्फ्रेड पार्क इलाहाबाद में 27 फरवरी 1931 को शहीद हुए आजाद और 23 मार्च 1931 को भगतसिंह, सुखदेव, राजगुरु को फाँसी दिए जाने के बाद सुशीला दीदी और दुर्गा भाभी को यह कार्य स्वतंत्र रूप से करना पड़ा।

इसके बाद वे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में सम्मिलित हो गईं। दिल्ली में सन 1932 में आयोजित कांग्रेस अधिवेशन उन्हीं के कारण सफल हुआ। शासन ने कांग्रेस को गैर कानूनी घोषित कर दिया था इसलिए अधिवेशन संभव नहीं था। महिला स्वयंसेविकाओं की टोली निकलना प्रारंभ हुई, घोड़े पर सवार गोरों ने इस टोली को ललकारा, वे बिना विचलित हुए घोड़े की टांगों के नीचे से निकलकर घंटाघर जा पहुँची। घंटाघर पहुँचकर सुशीला ने प्रस्ताव पढ़ना शुरू किया, एक फौजी अफसर ने प्रस्ताव की कापी उनके हाथ से छीन ली, किन्तु सुशीला दीदी को प्रस्ताव याद था, उन्होंने उसका मौखिक पाठ किया और उपस्थित स्वयंसेविकाओं ने उसका समर्थन कर दिया। इसके बाद उनको गिरफ्तार कर लिया गया। अब वे सुशीला से इंदुमती हो गयीं। मुकदमा चला और सजा के रूप में तीन महीने का कठोर कारावास और 200 रुपये जुर्माना किया गया। तीन महीने की सजा पूरी होने के बाद जुर्माना न दे सकने के कारण डेढ़ महीने की सजा और काटनी थी किन्तु जेल में बनी सहेलियों ने जुर्माना अदा कर दिया और वे मुक्त हो गयीं।

पुनः वकील श्याम मोहन के यहाँ ही रहने लगीं लेकिन क्रांतिकारी गतिविधियों में संलग्न रहने के कारण गिरफ्तार कर ली गईं। इस गिरफ्तारी में उनकी सहेली ने ही मुखविर का काम किया था। मि. एवरेट ने उन्हें एक महीने तक थाने में रखा किन्तु ठोस प्रमाण के अभाव में मुकदमा नहीं चलाया जा सका और वे फिर मुक्त हो गयीं।

अब दीदी सुशीला मोहन दिल्ली से अपने पिता के घर गुजरात (पंजाब) चलीं गयी। उनके पिता ने सुशीला का विवाह एक जनवरी 1933 को श्री श्याम मोहन वकील के साथ कर दिया। दोनों क्रांतिकारियों का यह सुखद मिलन था। सुशीला के कारण ही श्याम मोहन को भी एक वर्ष तक

जेल की नजरबंदी में रहना पड़ा था। सुशीला ने शादी के बाद एक ही शर्त रखी कि वे क्रांतिकारी गतिविधियों में सदा संलग्न रहेंगी और श्याम मोहन ने उसे सहर्ष स्वीकार कर लिया। ○○

11

रानी लक्ष्मीबाई

"खूब लड़ी मर्दानी वह तो झांसी वाली रानी थी।"

यह गीत हमने सुना भी होगा और गुनगुनाया भी होगा। शौर्य और साहस की प्रतिमूर्ति, तेज से परिपूर्ण जगमगाती दीपशिखा, भारत की वीरांगना रानी लक्ष्मीबाई ने नारी के प्रति संकल्पना, जिसे मैथिली शरण गुप्त ने अबला कहा है, को बदलकर अबला से सबला, कोमलांगी से वज्रांगना और रमणी से रणचंडी के रूप में प्रस्थापित किया है। ऐसी स्वतंत्रता सेनानी के जीवन पर यहाँ प्रकाश डाल रहे हैं।

सन् 1857 के स्वतंत्रता संग्राम में रानी लक्ष्मीबाई का उदय झांसी में हुआ। उस वीरांगना ने भारत को स्वाधीन कराने के लिए अपना सब कुछ न्यौछावर कर दिया। स्वतंत्रता संग्राम में उनका नाम स्वर्णाक्षरों में अंकित है।

रानी लक्ष्मीबाई का जन्म 19 नवम्बर 1835 को वाराणसी में हुआ था। उसके पिता मोरोपन्त पूना में पेशवा बाजीराव द्वितीय के दरबार में एक दरबारी थे। उनकी माता भागीरथी एक धर्म पारायण महिला थीं। बाजीराव द्वितीय के सन्तान न होने के कारण अंग्रेजों ने उनका राज्य हड़प लिया था और एक निश्चित पेंशन बाँध दी थी। तब पेशवा पूना छोड़कर बिठूर आ बसे और मोरोपन्त वाराणसी चले गए और यहीं रानी लक्ष्मी बाई का जन्म हुआ। उसका नाम मणिकर्णिका रखा गया, बाद में उसे मनुबाई कहने लगे। जब मनु चार

वर्ष की थी तभी उसकी माता का देहान्त हो गया। पुत्री के पालन-पोषण की जिम्मेदारी मोरोपंत पर ही आ गयी। वे फिर पुत्री के साथ पेशवा की शरण में आ गए।

पेशवा बाजीराव ने संतान न होने के कारण नानासाहब और राव साहब को गोद ले लिया था। मनुबाई की शिक्षा इन्हीं बालकों के साथ हुई। अब मनुबाई नाना साहब की धर्म बहन बन गयी। अपनी सुंदरता के कारण उसका नाम 'छबीली' भी पड़ गया। उसमें अपार ऊर्जा थी, इसमें कोई संदेह नहीं।

उसके पिता मोरोपन्त ने उसका विवाह 13 वर्ष की आयु में ही झांसी के राजा गंगाधर राव, जिनकी आयु काफी अधिक थी, के साथ कर दिया। गंगाधर राव की पहली पत्नी का देहांत हो गया था। संतान की इच्छा के कारण उन्होंने दूसरा विवाह मनुबाई के साथ किया। विवाह के उपरांत ससुराल में उनका नाम लक्ष्मी बाई रख दिया गया। सन 1851 में उनको एक पुत्र-रत्न की प्राप्ति हुई। किन्तु अत्यंत दुर्बल होने के कारण जन्म से तीन महीने बाद ही उसकी जीवन लीला समाप्त हो गई। यह उन दोनों के लिए एक बहुत बड़ा आघात था। अन्ततोगत्वा उन्होंने एक पुत्र गोद लिया जिसका नाम दामोदर राव था। अंग्रेजी सरकार ने गंगाधर राव को पुत्र गोद लेने की अनुमति नहीं दी। दत्तक पुत्र और झांसी के राज्य को विवादास्पद छोड़कर गंगाधरराव सन 1853 में परलोकगामी हो गए।

बड़ी उथल-पुथल और उहा-पोह के बीच गंगाधर राव के देहान्त के बाद राजमाता के रूप में शासनाधिष्ठित हो गई रानी लक्ष्मीबाई। सामने विपत्तियाँ ही थीं। पहले पुत्र की मृत्यु, फिर पति की मृत्यु और दत्तक पुत्र दामोदर राव के उत्तरधिकार को अंग्रेजों द्वारा स्वीकार न किया जाना इत्यादि उन विपत्तियों के कारण थे।

अंग्रेजों से विवाद चल ही रहा था कि गंगाधर राव के एक संबंधी सदाशिव नारायण राव ने स्वयं को झांसी का राजा घोषित कर दिया। रानी लक्ष्मी बाई ने तुरंत कार्रवाई कर सदाशिव नारायण राव के किले पर आक्रमण

कर उसे बंदी बना लिया। इसके फलस्वरूप राज्य में उनकी धाक जम गयी।

ओरछा के सरदार नत्थे खाँ ने 10 हजार सैनिकों के साथ झांसी पर धावा बोल दिया किन्तु मैदान में उसे मुँह की खानी पड़ी और युद्ध के मैदान से भाग खड़ा हुआ। हारने के बाद उसने रानी के खिलाफ अंग्रेजों के कान भरने शुरू कर दिए। अनुसारत: अंग्रेजों ने झांसी के राज्य पर जबरदस्ती कब्जा कर लिया। कोषागार पर ताले लगा दिए गये। रानी लक्ष्मीबाई ने महाराज्यपाल के साथ लिखा पढ़ी की किन्तु निष्फल। झांसी के किले पर अंग्रेजों का झंडा फहराने लगा और रानी की स्थिति एक कैदी जैसी हो गई।

सन 1857 का महाविद्रोह आरंभ हुआ जिसके सक्रिय नेता थे नाना साहब, रावसाहब, रानी लक्ष्मीबाई और तात्या टोपे। 4 जून 1857 को अंग्रेजों की देसी सेनाओं ने विद्रोह का बिगुल फूँक दिया और झांसी के किले पर अधिकार कर उसे पुन: रानी लक्ष्मीबाई को सौंप दिया। उसने सेना की कमान सँभाल ली और सेना का पुर्नगठन किया। उसकी सेना में गाऊस खां और खुदाबख्श जैसे विश्वासी तोपची थे जिसने रानी की सेवा तन मन से की।

अंग्रेजों ने सेनाध्यक्ष ह्यूरोज को झांसी के किले पर अधिकार करने का जिम्मा सौंपा। अच्छे शस्त्रास्त्रों के साथ विशाल सेना ने किले पर आक्रमण कर दिया किन्तु रानी के बुंदेले सैनिकों ने मुँह-तोड़ जवाब दिया और ह्यूरोज को भारी क्षति उठाते हुए पीछे हटना पड़ा। उनके तोपचियों ने अंग्रेजी सेना के असंख्य सैनिकों को मौत के घाट उतार दिया किन्तु फिर भी रानी की स्थिति सुदृढ़ नहीं थी। सेनाध्यक्ष ह्यूरोज ने और अधिक सेना लेकर पर्याप्त तोपों से पुन: चढ़ाई की। घमासान युद्ध हुआ लेकिन रानी को स्थिति कमजोर लगने लगी। वह चोर फाटक से निकल गयीं। अंग्रेजों को भी इस तरह से निकल भागने की भनक लग गयी, उन्होंने पीछा भी किया किन्तु रानी ग्वालियर जा पहुँची। ग्वालियर पर उन्होंने आसानी से कब्जा कर लिया। उस समय सभी देशभक्त लोग अंग्रेजों से खार खाए बैठे थे। उन्होंने रानी का समर्थन किया। इस प्रकार से रानी को सम्पत्ति और सेना दोनों मिल गई।

झांसी की जीत के बाद ह्यूरोज के हौसले काफी बढ़ गए थे। वह

रानी का पीछा करते हुए ग्वालियर जा पहुँचा। दो दिन तक घमासान युद्ध होता रहा। रानी अपने खड्ग से अंग्रेजी सेना को क्षति पहुँचाती रही। रानी की सेना की रसद और युद्ध सामग्री कम होती जा रही थी, जबकि अंग्रेजी सेना को कुमुक बराबर मिलती जा रही थी और रसद की भी कोई कमी नहीं थी।

रानी ने स्थिति भाँप कर वहाँ से निकल भागना ही उचित समझा और अंग्रेजों के घेरे को तोड़ वहाँ से निकल भागीं। रानी घोड़े पर सवार सरपट चली जा रहीं थीं। रास्ते में नाला पड़ा, घोड़ा तनिक हिचका, उसने आगे बढ़ने से जैसे इनकार कर दिया हो, रानी ने एड़ लगाई और घोड़ा अपने दोनों पैर उठा रानी को गिराने की चेष्टा कर रहा था, तभी पीछे से आते अंग्रेज सैनिकों ने रानी लक्ष्मीबाई पर गोलियाँ चलाईं और उन्हें एक गोली लग गई। रानी गिर पड़ीं और उन्होंने अंतिम साँस ली। उनके साथी सैनिकों ने तुरंत उनका दाह संस्कार कर दिया ताकि गोरे सैनिक उनके शव का स्पर्श तक न कर सकें। गोरी फौजों को राख और हड्डियों के सिवा और कुछ नहीं मिला।

18 जून 1857 एक स्मरणीय दिवस है रानी की वीरता पूर्ण समापन का। स्त्री होते हुए भी वीरता से लड़ीं और अंग्रेजों को खूब छकाया। उनकी वीरता बेजोड़ है, स्मरणीय है और अद्वितीय है। ○○

12

श्रीमती लीला नाग

श्रीमती लीला नाग उच्च शिक्षित एक संभ्रात महिला थीं। व्यवहार में मधुर किन्तु क्रांतिकारी विचारों में पली हुई और देश की स्वाधीनता के लिए सदैव तत्पर। प्रकाशन के क्षेत्र में भी उनकी रुचि थी और उन्होंने एक मासिक पत्रिका जिसका नाम जयश्री था, का प्रकाशन भी शुरू किया जिसके माध्यम से क्रांति विचारों को जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास किया जाता था। उन्होंने कई विद्यालयों की स्थापना और संचालन भी किया। इसमें "नारी शिक्षा मंदिर" नाम का एक हाईस्कूल भी था। "दीपावली संघ' नाम की एक नारी संस्था भी उन्होंने खोली थी। संस्कार और क्रांति ही उनका शिक्षा क्रम था। अंग्रेज इस देश से बाहर कैसे निकाले जाएँ- यही उनका मनोभाव था।

श्रीमती लीला नाग को "क्रिमिनल ला एमेंडमेंट एक्ट" के तहत 20 दिसम्बर 1931 को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया था। कोठरी में बंद लीला नाग एक पुस्तक पढ़ रहीं थी- लगता था जैसे उसमें बिल्कुल खो गई हों। उसी समय जेल सुपरिंटेडंट महोदय जेल का दौरा कर रहे थे। वह अंग्रेज था। श्रीमती नाग ने विनम्रता पूर्वक अभिवादन किया। अंग्रेज सुपरिंटेंडेंट उनके इस मधुर व्यवहार से बहुत प्रभावित हुआ। उसने कहा- "मिसेज नाग। आप जैसी शिक्षित और संभ्रात महिला को जेल में देखकर मुझे आश्चर्य ही नहीं दु:ख भी हो रहा है। समझ नहीं पा रहा हूँ कि आप इन क्रांतिकारियों के झाँसे में कैसे आ गईं।

आज देश का तकाजा है- देश को अंग्रेजों से छुड़ाकर स्वाधीन कराना है। शिक्षित होने का यह तो अर्थ नहीं निकलता मुझे देश की भलाई के बारे में विचार नहीं करना चाहिए। देश-स्वाधीनता का आंदोलन केवल अनपढ़ लोगों का ही आंदोलन नहीं है। यह प्रत्येक भारतवासी का आंदोलन है। और हम पढ़े- लिखे लोगों की जिम्मेदारी और भी बढ़ जाती है।

जेल अधीक्षक ने जाते हुए कहा-

"ईश्वर का धन्यवाद है कि इस आंदोलन में आप जैसे शिक्षित लोगों का प्रतिशत अधिक नहीं है। अगर कहीं, यह प्रतिशत बढ़ जाए तो हम लोगों का भारत में रुकना दुष्कर ही नहीं असंभव भी हो जाएगा।"

श्रीमती लीला नाग फिर स्वतः चिंतन में डूब गयीं और देश की स्वाधीनता और बाहर कार्यरत क्रांतिकारियों के बारे में विचार करती रहीं।

अन्ततोगत्वा सन 1938 में उन्हें जेल से रिहा किया गया। ○○

13

दुर्गा देवी वोहरा

दुर्गा देवी का विवाह भगवती चरण वोहरा के साथ हुआ था। विवाह के समय दोनों की आयु लगभग 13 वर्ष और 10 वर्ष ही थी। छोटी आयु में विवाह के बाद दोनों ने अपने आपको ऐसा ढाल लिया था कि उनमें एक दूसरे को भली-भाँति समझने, आपस में तादात्म्य बिठाने तथा सुख दुःख में सदैव साथ रहने का भाव पैदा हो गया था। विवाह के समय दुर्गा देवी कम पढ़ी लिखीं थीं। भगवती चरण ने उनकी आगे पढ़ाई की व्यवस्था की। भगवती चरण वोहरा क्रांतिकारी विचारों के थे, इसलिए दुर्गा देवी को लग गया था कि उन्हें अपने पैरों पर खड़े होकर गृहस्थ जीवन का निर्वाह करना होगा और वैसा विचार कर कार्य करने लगीं। वैवाहिक जीवन के फलस्वरूप उन्हें एक पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई जिसका नाम शचीन्द्र रखा गया। आगे चलकर भगवती भाई क्रांतिकारी कार्यों में संलग्न हो गए और इसलिए सभी क्रांतिकारियों का आना जाना सतत लगा रहता था। क्रांतिकारी लोग उन्हें 'दुर्गा भाभी' कहते थे।

लाहौर में सांडर्स की हत्या हो चुकी थी। भगतसिंह और राजगुरु को लाहौर से बाहर भेजना था। सुखदेव दुर्गा भाभी के पास पहुँचे और पूछा भाभी कुछ पैसे हैं आपके पास। दुर्गा ने कहा हाँ हैं। मुझे पैसों की आवश्यकता है । दुर्गा भाभी ने कहा "तो पूछ क्यों रहे हो, पैसे इसी काम के लिए हैं।" साथ

ही सुखदेव ने कहा कि यदि आपको किसी के साथ बाहर भेजा जाए तो पार्टी के काम के लिए जा सकोगी क्या? अगर पहचान के होंगे तो मुझे कोई कठिनाई नहीं। अभी मैं उनके नाम नहीं बता सकता। अगर पार्टी के आदमी हैं तो पूछने की कोई आवश्यकता ही नहीं है। साथ में शची भी जाएगा।

मार्ग में संकट भी आ सकता है। ऐसे में आप और बच्चा दोनों मुसीबत में फँस जायेंगे। परीक्षा क्यों ले रहे हो सुखदेव! उनकी सहधर्मिणी होने के नाते यह मेरा धर्म है और मैं भी तो अब पार्टी के कार्य में संलग्न हूँ।

दूसरे दिन रात्रि को लगभग ग्यारह बजे दो लोगों के साथ सुखदेव दुर्गा भाभी के मकान पर आ गया। पहुँचकर दरवाजा बंद कर लिया। उसने पूछा "भाभी! आपने इनको पहचाना क्या।" भाभी ने दोनों को देखा, एक नाटे कद का सांवला सा और दूसरा अच्छी लम्बाई का गौर वर्ण का, बहुत कीमती सूट पहने, चमचमाते बूट और सिर पर फेल्ट हैट लगा रखा था। दुर्गा उनको पहचान न सकी। अब क्या था, भगतसिंह जोर से हँसा, तब दुर्गा भाभी ने कहा, अरे! भगतसिंह तुम हो। इस पर भगतसिंह ने कहा "जब तुम्हीं मुझे नहीं पहचान सकीं, तब पुलिस क्या पहचानेगी?" दूसरा व्यक्ति राजगुरु था।

सुबह होते ही बच्चे शचीन्द्र सहित तीनों लोग रेलवे स्टेशन पहुँच गए। भगतसिंह ने सूट के ऊपर चेस्टर पहन रखा था और बाहर की जेब में एक रिवाल्वर था और बच्चे को बाएँ हाथ में उठा रखा था, बच्चा भी फेल्ट हैट लगाए था, उससे उसका चेहरा थोड़ा ढका हुआ लग रहा था। राजगुरु नौकर के लिवास में था। दुर्गा भाभी ऊँची एड़ी के सैंडल पहने बड़े ठाट से चल रहीं थी, लगता था कि किसी उच्च अधिकारी की पत्नी हों, कंधे पर पर्स में एक रिवाल्वर रखा था और वे भगतसिंह के पीछे चल रहीं थी। साथ में नौकर के लिवास में राजगुरू चल रहा था। भगतसिंह और दुर्गा भाभी प्रथम श्रेणी के डिब्बे में बैठे और राजगुरु नौकर वाले डिब्बे में बैठा। लखनऊ पहुँचने पर योजना के अनुसार उतर कर राजगुरु आगरा के लिए खिसक गया। लखनऊ से ही सुशीला दीदी को तार कर दिया "भाई के साथ कलकत्ता आ रही हूँ- दुर्गावती।" भगवती चरण वोहरा और सुशीला दीदी उन्हें लेने कलकत्ता स्टेशन पहुँच गए। स्टेशन पर उतरते ही भगवती चरण ने उन्हें

पहचान लिया, उनका लिवास देखकर एक बार वे लोग भी चक्कर में पड़ गए थे। भगवती चरण सहसा बोल पड़े "दुर्गे! हम लोगों का सच्चा विवाह तो आज हुआ है।" इस पर सुशीला दीदी ने चुटकी ली और पूछा "दस साल पहले क्या हुआ था।" वह तो गुड्डा-गुड्डी का विवाह था, जो हमारे माता-पिता ने किया था। अब लग रहा है कि यह एक क्रांतिकारी की पत्नी है। लेकिन वे लोग कलकत्ता सुरक्षित पहुँच गए थे। कुछ दिन भगतसिंह वहाँ रहे और दुर्गादेवी लाहौर लौट आईं।

दिल्ली असेम्बली पर बम विस्फोट की योजना बनी, योजना को अंजाम दिया भगतसिंह और बटुकेश्वर दत्त ने। दोनों को गिरफ्तार कर आजीवन कारावास का दंड मिला।

चन्द्रशेखर आजाद ने उन लोगों को छुड़ाने का दायित्व दुर्गा भाभी और सुशीला दीदी को दिया। उसके लिए बम इत्यादि भी बना लिए गए थे। एक जून 1930 को जेल पर आक्रमण करना था। बम ठीक बने हैं या नहीं इसके परीक्षण के लिए भगवती चरण वोहरा, विश्वनाथ वैशंपायन और सुखदेव राज रावी नदी के किनारे पहुँचे। 28 मई 1930 को परीक्षण करते समय बम भगवती चरण बोहरा के हाथ में ही फट गया, और उनकी मृत्यु हो गई। दुर्गा भाभी के लिए यह बहुत बड़ा आघात था। किन्तु वे विचलित नहीं हुईं। भगतसिंह, राजगुरु और सुखदेव को छुड़ाने के लिए दुर्गा भाभी ने रणचंडी का रूप धारण कर लिया।

बम्बई के गर्वनर मि. हेली' को मारने का निश्चय किया गया और इस निमित्त कुछ साथियों को लेकर बम्बई आ पहुँची। उनके साथियों में थे पृथ्वीसिंह और सुखदेव राज। मि. हेली शाम के समय अपने बंगले के सामने बैठकर लोगों से मिलते थे। दुर्गा भाभी पारसी महिला के वेश में उनसे मिलेंगी और पृथ्वी सिंह और सुखदेवराज उनके सहयोगी रहेंगे। पुत्र शचीन्द्र को अपने एक शुभ चिंतक श्री गणेश रघुनाथ वैशंपायन के घर छोड़ दिया था। किन्तु दुर्भाग्य से हेली बंगले में नहीं मिला। अन्य स्थानों पर भी तलाशा गया किन्तु वह कहीं नहीं मिला और उसे मारने की योजना निष्फल रही। गवर्नमेंट हाउस, लेमिंग्टन रोड पर एक पुलिस स्टेशन था। वहाँ एक गाड़ी आकर रुकी जिसमें

एक महिला और गोरे अफसर थे। क्रांतिकारियों को लगा कि यह उन्हें गिरफ्तार करने आई है। पृथ्वीसिंह ने आदेश दिया– "शूट"। यह सुनते ही दुर्गा भाभी ने महिला को छोड़ सब पर गोलियाँ दाग दीं। गोरे लोग गाड़ी की ओट लेकर जमीन पर लेट गए। गोलियों की आवाज सुनकर और भी गोरे लोग पुलिस स्टेशन से बाहर आ गए और क्रांतिकारी अपने ठिकाने पर पहुँच गए। किन्तु क्रांतिकारियों की गोली से एक गोरा अधिकारी घायल हो गया था और एक महिला के पैर में भी गोली लगी थी।

पृथ्वीसिंह एक साधु के वेश में नौसारी पहुँच गए और दुर्गा भाभी अपने बच्चे को तलाशकर अपने साथ कानपुर ले गईं। जब दुर्गा भाभी चन्द्रशेखर आजाद के सामने आई तो वे काफी क्षुब्ध थे और उन्हें प्रताड़ित करना चाह रहे थे किन्तु शीघ्र ही वे शांत हो गए।

उन पर एक आघात और हुआ। उनके पति की मृत्यु के उपरांत चन्द्रशेखर आजाद ने इलाहाबाद के एल्फ्रेड पार्क में ब्रिटिश सैनिकों के साथ युद्ध करते हुए स्वयं को एक गोली मार ली और उनका प्राणान्त हो गया। अब दुर्गा भाभी आश्रय विहीन हो गई। वे इधर–उधर भटकती रहीं और कहीं अधिक चिंता उन्हें अपने पुत्र की थी। वे कहीं रहतीं और पुत्र कहीं और रहता।

लाहौर पहुँचने पर उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। उन्हें छह महीने नजरबंद रखा गया। उसके बाद भी लाहौर में ही तीन साल तक नजरबंद रखा गया और नजरबंदी समाप्त होने पर उन्हें मुक्त कर दिया गया।

अंत में वे गाजियाबाद पहुँच गयीं और वहाँ प्यारेलाल कन्या विद्यालय में अध्यापन कार्य में लग गयीं और सफल अध्यापिका के रूप में उनका यश हुआ। बाद में दिल्ली आ गयीं और कांग्रेस में कार्य करने लगीं। उनके तप, त्याग और लगन को देखते हुए उन्हें दिल्ली प्रदेश कांग्रेस कमेटी का अध्यक्ष बनाया गया। स्वाधीन भारत में लखनऊ को अपना स्थायी निवास बनाया और नन्हें–मुन्नों को राष्ट्रीय विचारों से ओत–प्रोत करने के लिए मांटेसरी विद्यालय खोला और अपनी सारी शक्ति उसमें लगा दी।

सबसे अन्त में अपने अवकाश प्राप्त पुत्र शचीन्द्र के साथ राजनगर, गाजियाबाद में रहने लगीं और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के एक स्वयंसेवक ने शाल उढ़ाकर वहीं उनका अभिनंदन किया। आवाज में वही कड़क थी किन्तु नेत्र-ज्योति काफी क्षीण हो गई थी। बाद में उनका निधन हो गया। राष्ट्र के लिए समर्पित दुर्गा भाभी सभी के लिए प्रेरणास्रोत हैं। ○○

14

श्रीमती इंदुमती सिंह

चटगाँव के एक कार्यकर्त्ता श्री गोपाल लाल सिंह की पुत्री का नाम श्रीमती इंदुमती सिंह था। क्रांति के कार्यों और क्रांतिकारियों के प्रति उनकी रुचि बहुत थी। यद्यपि प्रत्यक्ष रूप से इंदुमती सिंह ने क्रांति आन्दोलन में भाग नहीं लिया किन्तु लड़कियों को क्रान्ति के लिए प्रेरणा देने और उसमें भाग लेने के लिए उनकी तैयारी कराने में बहुत प्रवीण थीं। इसी आरोप में उन्हें 14 दिसम्बर 1931 को गिरफ्तार कर अभियोग चलाया जिसमें उन्हें छह वर्ष की सजा दी गयी। पूरे छह वर्ष जेल में रहने के बाद वे मुक्त हुईं।○○

15

कनकलता बरुआ

असम के लोग, अगस्त क्रांति में पुलिस और फौज द्वारा अत्याचार के कारण काफी रुष्ट थे और फिर उनके द्वारा खुलकर सत्याग्रह आंदोलन ने क्रांति का रूप धारण कर लिया। असम के 'गोपुर' गाँव के थाने पर तिरंगा लहराने की योजना बनी। जुलूस में सबसे आगे कनक लता बरुआ, जिसकी आयु मात्र 14 वर्ष थी, तिरंगा झंडा लेकर चल रही थी। थानेदार अपने सिपाहियों के साथ कनक लता को रोकने के लिए आगे आया। उसने पुलिस को संबोधित करते हुए कहा कि "आप लोग तो हमारे भाई हैं। हमें क्यों रोकते हैं- आप भी हम लोगों में सम्मिलित हो जाएँ और हम सब साथ मिलकर झंडा फहरायेंगे।

थानेदार ने सबको अन्दर आने से रोक दिया तब कनकलता ने कड़ककर कहा कि "थाना तो जनता की संपत्ति है। जनता की संपत्ति के रक्षक यदि जनता का कहना नहीं मानेगी तो जनता उन्हें हटा देगी और अपनी संपत्ति अपने अधिकार में ले लेगी।"

इतना कहकर वह थाने में अन्दर घुसने लगी। थानेदार ने तुरंत गोली चला दी, गोली कनकलता बरुआ को लगी और वह वहीं शहीद हो गई। एक नौजवान मुकुंद काबता ने उसके हाथ से झंडा लेकर उसे फहराने के लिए बढ़ा, उसे भी गोली लगी और वह भी धराशायी हो गया। जनता का दल बढ़ता रहा- गोली चलती रही- लोग गिरते रहे। अंततोगत्वा थाने पर झंडा फहर ही गया और इस तरह कनकलता बरुआ की शहादत ने लोगों में जोश भर दिया।○○

16 श्रीमती कमला चटर्जी

श्रीमती कमला चटर्जी एक मेधावी छात्रा थीं। छात्र जीवन से ही उन्हें लिखने का बहुत शौक था। पत्र- पत्रिकाओं में उनके लेख छप रहे थे। इन लेखों के प्रकाशन से सरकार घबड़ा उठी क्योंकि उनके लेख नौजवानों में विद्रोह की ज्वाला भड़का रहे हैं, बस उन पर यही आरोप था। बंगाल आर्डिनेंस के अधीन उन्हें सन 1931 में गिरफ्तार कर लिया गया, जेल की सजा सुनाई गई और सन 1937 में वे जेल से मुक्त हुईं। ○○

17 कमला मिरी

कौशल कोनवर को रेल की पटरियाँ उखाड़ने और रेल सम्पत्ति को नुकसान पहुँचाने के जुर्म में फाँसी की सजा हुई। 15 जून 1943 को उन्हें फाँसी दे दी गई। उनके साथ ही कमला मिरी को भी गिरफ्तार किया गया था और जेल की सजा हुई। जेल में उन्हें इतनी यातनाएँ दी गयीं कि जेल में ही उनका प्राणान्त हो गया। ○○

18 श्रीमती कल्याणी देवी

श्रीमती कल्याणी देवी एम.ए. पास महिला थीं। छात्र जीवन से ही उन पर क्रांति का रंग चढ़ गया था। सत्याग्रह आंदोलन में भाग लेने के कारण सन 1931 में गिरफ्तार कर आठ महीने के कारावास की सजा सुनाई गई। तमंचा रखने के कारण सन 1933 में पुनः गिरफ्तार हुई किन्तु कोई मुकदमा नहीं बना। बंगाल आर्डीनेंस के कारण एक बार फिर गिरफ्तार हुई और कई वर्षों तक जेल में रहीं। ○○

19 श्रीमती अमिता सेन

श्रीमती अमिता सेन एक उग्र क्रांतिकारी महिला थीं। बंगाल के क्रांतिकारियों में उनकी गणना बहुत महत्त्वपूर्ण है। बंगाल आर्डीनेंस के अंतर्गत सन 1934 में अमिता सेन को गिरफ्तार किया गया, सजा हुई और सन 1938 में उन्हें जेल से रिहा किया गया।

बंगाल आर्डीनेंस के तहत गिरफ्तार हुईं अन्य क्रांतिकारी महिलाएँ जिन्हें अलग-अलग अवधि के लिए कारावास का दंड दिया गया। उनके नाम निम्नलिखित हैं-

1. सुशीला दास गुप्त
2. लावण्य प्रभा दास गुप्ता
3. सुरमा दास गुप्ता
4. कमला दास गुप्ता
5. सुनीति देवी
6. उषा मुकर्जी
7. प्रतिभा भद्र
8. सरयू चौधरी
9. इंद्रसुधा घोष
10. श्रीमती हेलना बाल
11. श्रीमती प्रफुल्ला नलिनी
12. श्रीमती अरुणा सान्याल
13. श्रीमती आशा दास गुप्ता
14. श्रीमती सुषमा दास गुप्ता
15. सुभद्रा भद्र
16. प्रमिला गुप्ता
17. शांतिकणा सेन
18. शांतिसुधा घोष
19. विमला प्रतिभा देवी
20. हास्यबाल देवी
21. ममता मुकर्जी
22. सरोज नाग

20

कुमुदिनी

जेल के अन्दर बंद क्रांतिकारी और जेल से बाहर के क्रांतिकारियों के बीच समाचार संवाद बनाए रखने का दायित्व कुमुदिनी ने बखूबी निभाया, उसमें यदि कष्ट भी उठाना पड़े तो तनिक भी चिंता नहीं थी। समाचार कैसे आते जाते थे वह निम्नलिखित उदाहरण से स्पष्ट है।

एक चूड़ी वाला सिर पर चूड़ियों का झब्बा लादे चटगाँव जिले के 'कुमीरा' गाँव में फेरी लगाता हुआ घूम रहा था। एक बालिका ने आवाज देकर कहा "ऐ चूड़ी वाले भैया! जरा अन्दर आकर अपनी चूड़ियाँ दिखाओ।"

"आया बिटिया" कहकर वह अंदर बरामदे में जाकर बैठा। बालिका उसे अन्दर सहन में ले गयी, और अंदर बैठी महिलाओं को चूड़ी दिखाने लगा। वहाँ एक सुपरिचित लड़की उसकी प्रतिक्षा में पहले से ही थी। उस लड़की ने चूड़ी वाले के हाथ में तह किया एक कागज रखा। वह चूड़ी वाला एक महान क्रांतिकारी सूर्यसेन था। यह वही सूर्यसेन था जिसने चटगाँव में सेना और शस्त्रागारों को लूटा था और वह अब चूड़ी वाला बना हुआ था। सूर्यसेन के हाथ में पत्र देने वाली महिला की प्रिय शिष्या कुमुदिनी थी। कुमुदिनी उन दिनों समाचार लाने ले-जाने के काम में लगी थी। कुमुदिनी के पास पत्र क्रांतिकारी अर्धेन्दु गुहा ने भिजवाया था।

सूर्यसेन ने कागज खोला, कागज बिल्कुल कोरा था। कुमुदिनी एक ग्लास में पानी लेकर सूर्यसेन के पास पहुँची। पानी में कागज भिगोते ही उस पर लिखावट साफ नजर आ रही थी। लिखा था "कच्ची-पक्की रोटियाँ और

पतली दाल खाते-खाते जी ऊब गया है, कुछ लड्डू और जलेबियाँ भिजवाने का कष्ट करें। सूर्यसेन ने उस भाषा का अर्थ समझ लिया, उसके अनुसार जेल के अन्दर के क्रांतिकारियों ने बम और रिवाल्वर भेजने की प्रार्थना की थी। इस महत्त्वपूर्ण कार्य में कुमुदिनी लगी हुई थी। इसी कारण से शासन को झुकना पड़ा और क्रांतिकारियों के साथ संधि के लिए मजबूर होना पड़ा। ○○

21 गौरा बाई

"करो या मरो" की क्रांतिकारी गूँज सर्वत्र फैल चुकी थी। इसी शृंखला में मध्यप्रदेश के नरसिंहपुर जिले के ग्राम चीचली में क्रान्तिकारी एक जुलूस निकाल रहे थे। पुलिस बल पहले से ही सतर्क था। वह जुलूस को तितर-बितर करने का प्रयास कर रहे थे किन्तु जुलूस और भी उग्र हो गया, जोश में नारे लगा रहे थे। पुलिस ने लाठियाँ भाजना आरंभ कर दिया, इसके कारण आंदोलनकारी बिखरने लगे। इस दुष्कृत्य के विरूद्ध एक महिला गौराबाई ने पुलिस को प्रताड़ित किया और लोगों को भागने से रोका। लोगों ने भी पत्थर मारने शुरू कर दिए, इससे घबड़ाकर पुलिस ने गोली चलानी शुरू कर दी। पहली गोली गौराबाई को लगी और वह गिर गयी। एक महिला पर गोली चलाने के लिए एक युवक मंसाराम जसाटी ने पुलिस को फटकारा, उसे भी गोली मार दी गई। इस प्रकार से "भारत छोड़ो आंदोलन" के अंतर्गत चीचली ग्राम के दो लोगों ने शहादत दी। एक गौराबाई और दूसरे मंसाराम जसाटी थे। गौराबाई की आयु उस समय 45 वर्ष थी। पातीराम उसके पति थे। गौराबाई की शहादत, उनके लिए एक वीरांगना की शहादत थी। ○○

22 कु. जयावती संघवी

जयावती का जन्म अहमदाबाद में सन 1924 को हुआ था। बड़ी होकर वह भी क्रांतिकारी विचारों में रम गई। ब्रिटिश शासन के विरोध में 5 अप्रैल 1943 को अहमदाबाद नगर में एक जूलूस निकाला जा रहा था। इसमें अधिकांश लोग कालेज के छात्र-छात्राएँ ही थे और उसमें भी प्रमुख कुमारी जयावती संघवी ही थी, वही जूलूस का नेतृत्व कर रही थी। पुलिस ने जुलूस को तितर-बितर करने के लिए अश्रु गैस के गोले फोड़े। इस गैस का बड़ा प्रभाव कुमारी जयावती पर हुआ और वे बेहोश हो गयीं जिसके कारण उनका प्राणान्त हो गया। ○○

23 श्रीमती नवनीत कोमला सिन्हा, लावण्यलता चंदा

17 दिसंबर 1931 को कालेज के एक क्रांतिकारी युवक मणीचन्द्र चौधरी को गिरफ्तार किया गया और उन पर यह आरोप लगाया गया कि उसने आक्रमण करने वाली छात्राओं को रिवाल्वर उपलब्ध कराए थे। इसी शृंखला में श्रीमती नवनीत कोमला सिन्हा और लावण्यलता चंदा दोनों को गिरफ्तार किया गया, मुकदमा चलाया गया और उपरांत आजीवन कारावास की सजा सुनाई गई। ○○

24 कु. प्रभावती

प्रभावती एक प्रभावशाली डाक्टर थीं, सौभाग्य से उनके पिता भी डाक्टर थे। अपने मरीजों से क्रांति गाथाएँ सुनते-सुनते उसके हृदय में भी क्रांति ज्वाला भड़का उठी। "भारत छोड़ो आन्दोलन" के समय स्वयं उसमें कूद पड़ी। जूलस और नारे लगाने से भी आगे बढ़कर वह तोड़-फोड़ करने लगीं। इसी कारण से उन्हें गिरफ्तार कर जेल में डाल दिया गया। अनेक प्रकार से यातानाएँ दी गईं, बीमार पड़ने पर उपचार की कोई व्यवस्था नहीं थी। जब उनके बचने की आशा बिल्कुल क्षीण हो गई, तभी उन्हें जेल से मुक्त किया गया। जेल से आने के बाद शीघ्र ही उनकी मृत्यु हो गई। ○○

25 फुलेश्वरी

एक 12 वर्ष की बालिका जिसका नाम फुलेश्वरी था। वह 'ढोकाईजुली' गाँव में एक जुलूस का नेतृत्व कर रही थी। तेजपुर (असम) से 16 मील दूर 'ढोकाई जुली' गाँव था। जुलूस थाने पर तिरंगा फहराने का प्रयास कर रहा था। बिना किसी अवरोध के तिरंगा फहराने के लिए थाने वालों से अनुरोध किया किन्तु थाने में तैनात पुलिस बल इसके लिए तैयार न हुआ। जोर-जबरदस्ती करने पर पुलिस ने गोली चला दी। वह 12 वर्ष की बालिका, जिसके हाथ में तिरंगा था, गोली लगने से शहीद हो गई। उसके बाद भी पुलिस गोली चलाती रही जिसमें बीस लोग शहीद हो गए। ○○

26 भागेश्वरी

असम के नवगाँव जिले के "बहरमपुर" गाँव में एक आमसभा आयोजित की गई थी। गाँव के सभी लोग अपने साथ तिरंगा झंडा लेकर सभा स्थल पहुँचे थे। उसमें रत्नमाला नाम की एक छोटी बच्ची भी सम्मिलित थी। अंग्रेज सिपाहियों ने सभा- स्थल घेर लिया और सबके हाथ से झंडा छीनने लगे। बच्ची के हाथ से भी झंडा छीनने लगे। बच्ची के हाथ से झंडा छीन उसे जोर से धक्का दे दिया। उस बच्ची की दीदी भोगेश्वरी यह सब देख रही थी। उसने अंग्रेज सिपाही से झंडा छीनने के साथ उसकी पिटाई भी कर दी। उस अंग्रेज सिपाही ने न आव देखा न ताव, तुरंत गोली चला दी। भागेश्वरी देवी को शहीद होते देख जनता का संतुलन बिगड़ गया, बाद में पुलिस की गोली से अनेक लोग शहीद हुए और भागेश्वरी सहित अन्य शवों को लेकर सुबह एक जूलूस निकाला गया। ○○

27 मातंगिनी हाजरा

बंगाल के मेदिनीपुर के क्रांतिकारियों ने अगस्त 1942 की क्रांति में बढ़ चढ़कर भाग लिया और यह जिला अंग्रेज सरकार का सदैव से कोपभाजन रहा है। सरकार ने अनेक प्रकार से अत्याचार किए और यहाँ तक कि उनकी नावें और साईकिलें छीन लीं। वहाँ ऐसी स्थिति उत्पन्न कर दी कि अकाल पड़े और उसके कारण से हजारों लोग मर जाएँ।

इन सब भयावह स्थितियों से बचने के लिए मेदिनीपुर के शासकीय

ठिकानों पर चारों दिशाओं से धावे बोले गए। 29 सितंबर को उत्तर की ओर से आने वाले जुलूस की संख्या काफी बड़ी थी। उसमें महिलाएँ भी पर्याप्त संख्या में थी और जुलूस का नेतृत्व कर रही थी 73 वर्ष की एक वृद्ध महिला जिसका नाम था मातंगिनी हाजरा। वह फौजियों को दुत्कारती हुई आगे बढ़ती जा रही थी, साथ ही चिल्लाकर कह रही थी, कुछ शर्म करो और अंग्रेज सरकार की नौकरी छोड़ हमारे साथ आ मिलो। फौजी ऐसी बातें कहाँ सुनने वाले थे, उन्होंने मातंगिनी हाजरा के दोनों हाथों में गोली मार दी किन्तु उस वृद्ध महिला ने तिरंगा नहीं गिरने दिया। इससे चिढ़कर फौजी ने उसके मस्तक पर गोली मार दी और वह शहीद हो गई। मातंगिनी के अतिरिक्त इस गोली कांड में शहीद होने वाले अनेक लोग थे जिनमें प्रमुख नाम हैं लक्ष्मीनारायण दास, पुरीमाधव प्रमाणिक, नागेन्द्रनाथ सामंत तथा जीवन चंद्रवंश इत्यादि। ■

28 राधिका देवी

उत्तर प्रदेश के गाजीपुर में भी क्रांति भड़क उठी, अगस्त 1942 की क्रांति में भी लोगों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। रेल के इंजन तोड़े गए, मालगाड़ियों को पटरी से उतार दिया गया। भीड़ को बढ़ता देख पुलिस ने अंधाधुंध गोलियाँ चलाई, जिसमें अस्सी लोग शहीद हो गए। आन्दोलन और भी उग्र हो गया साथ ही पुलिस का दमन भी बढ़ रहा था और एक महिला क्रांतिकारी राधिका देवी को कुएँ में धक्का दे दिया और इस प्रकार से वह भी शहीद हो गई। कुल 167 लोग शहीद हुए। ○○

29 रुक्मिणी बाई

रुक्मिणी बाई का जन्म रायपुर (म.प्र.) जिले के 'तमोरा' ग्राम में हुआ था। बिझवार काशीवाड़ा के श्री महाराजी क्षेत्रपाल से उनका विवाह हुआ था। यद्यपि वह एक महिला थी किन्तु पुरुषोचित गुण उनमें झलकते थे और वह भी क्रांतिकारी के रूप में। तोड़-फोड़ के काम में भी पुरुषों के साथ मिलकर खूब हिस्सा लेती थी। पुलिस उससे परेशान हो उठी और बड़ी मुश्किल से उसे गिरफ्तार करने में सफल हुई। मुकदमा चला, छह महीने का कारावास का दंड मिला और कारावास में ही उनकी मृत्यु हो गई। ○○

30 श्रीमती रेणुका सेन

श्रीमती रेणुका सेन ने प्रसिद्ध महिला क्रांतिकारी श्रीमती लीला नाग के बालिका विद्यालय से मैट्रिक पास करने के बाद बी.ए. पास किया और कलकत्ता जाने के बाद एम.ए. (अर्थशास्त्र) की स्नातकोत्तर डिग्री प्राप्त की। क्रांतिकारी विचारों से पूर्णतया ओत-प्रोत थीं। 'डलहौजी स्क्वायर बम कांड' में उन्हें पहली बार गिरफ्तार किया गया और एक महीने की सजा हुई। प्रेसीडेंसी जेल में सजा काटकर वे मुक्त हुई। इसके बाद श्रीमती लीला नाग के साथ 20 दिसंबर 1931 को पुनः गिरफ्तार की गई किन्तु उसी समय अर्थात् 1931 में ही उनको छोड़ दिया गया। वहाँ से छूटने के बाद उन्होंने कहा :-

"मुझे इस बात का अत्याधिक खेद है कि मैं पूरा समय दीदी लीला नाग के साथ न रह सकी। जेल में मेरा अनुभव था कि मैं विश्वविद्यालय में उनसे पढ़ रही हूँ और हाईस्कूल में पढ़ते हुए मैं उतना नहीं सीख पाई जितना इस अल्प समय में अपनी दीदी के सान्निध्य में रहकर सीखा है।" ○○

31 श्रीमती गुरुदयाल कौर

बर्मा में आजाद हिन्द फौज और रानी झांसी रेजीमेंट दोनों अपना पड़ाव डाले हुए थे, उसी समय ब्रिटेन के बम वर्षक विमानों ने भारी गोलाबारी की।

श्रीमती गुरदयाल कौर सन 1942 में रानी झांसी रेजीमेंट में भरती हुई थीं और फौज के जीवन के साथ समरस हो गयीं थीं। कठिनाइयाँ भी सहज लगती थीं। इम्फाल में जीतने के बाद अंग्रेजी सेना के कदम बर्मा की ओर बढ़ चले थे और ब्रिटिश सेना के बमवर्षक नागरिक ठिकानों पर भी बम गिरा रहे थे। रानी झांसी रेजीमेंट की महिला सैनिक नागरिकों को बचाने में तत्पर थीं। उसी में गुरुदयाल कौर जख्मी हो गई और अस्पताल में उनकी मृत्यु हो गई।○○

32

कुमारी जानकी थीवर्स, श्रीमती एम.ए. चिदंबरम तथा कर्नल लक्ष्मी

नेता जी सुभाष चन्द्र बोस उस समय गणमान्य नेता बन गए थे। उन पर महिलाओं की भी अगाध श्रद्धा थी। वह जो भी कहते थे, उसे क्रियांवित करने के लिए सभी लालायित रहते थे। 2 जुलाई 1943 को वे सिंगापुर पहुँचे। लोग बरबस उनकी प्रतीक्षा कर रहे थे, उन्हें देखते ही सबमें उत्साह की लहर दौड़ गयी। देखते-देखते "परिवर्तन" वाले अंग्रेजी मुहावरे का स्थान "क्षण भर में परिवर्तन" ने ले लिया।"

तुरत-फुरत महिला शाखा का गठन हो गया और श्रीमती एम. ए. चिदंबरम उसकी अध्यक्ष नियुक्त हुई तथा महिलाओं के विकास विभाग की अध्यक्षा बनीं डॉ. लक्ष्मी स्वामीनाथन। तभी सुभाष बाबू ने महिला सेना बनाने का सुझाव दिया। वह उन दोनों को बहुत अच्छा लगा और उसे कार्य रूप में तुरंत परिणत करने का आग्रह किया। खेल-कूद क्लब में महिलाओं के सामने नेता जी सुभाष का विचार बताया गया और उन लोगों ने कहा कि महिला सेना का गठन अभी और यहीं किया जाए। डा. लक्ष्मी महिला सेना में भरती के लिए सभी के नाम लिखने लगीं। नाम लिखने के बाद डा. लक्ष्मी ने कहा कि आजादी के दस्तावेज पर स्याही से नहीं खून से दस्तखत करने हैं। उन्होंने अपना ही अंगूठा चीरकर उसी खून से सबके हस्ताक्षर ले लिए- ऐसे होते हैं आजादी के दीवाने, सुभाष बाबू यह देखकर गद्‌गद हो गए। तुरन्त महिला सेना का गठन "रानी झांसी रेजीमेंट" के रूप में हो गया। इसकी कमान्डर बनी डा. लक्ष्मी जिन्हें कैप्टन का रैंक देकर बाद में उन्हें पदोन्नत कर कर्नल बना

दिया गया। अंग्रेजों ने उन्हें जब गिरफ्तार कर लिया तो कुमारी जानकी थीवर्स को उनके स्थान पर कमान्डर नियुक्त किया गया। ○○

33

कुमारी ज्योतिर्मयी गांगुली

शहीद रामेश्वर बनर्जी तथा अन्य साथियों की शवयात्रा निकाली जा रही थी, असंख्य भीड़ थी और उसमें सम्मिलित होने के लिए कुमारी ज्योतिर्मयी गांगुली ने अपनी गाड़ी निकाली और उसमें बैठ तेजी से गाड़ी चलाते हुए जा रही थीं। महिलाओं का शवयात्रा में सम्मिलित होना वर्जित है, उसने इसकी भी परवाह नहीं की।

कुमारी ज्योतिर्मयी में बोलने की कला थी, उनके भाषण बहुत उत्तेजक और भड़काऊ होते थे। इससे पुलिस वाले परेशान रहते थे। पुलिस वाले उसकी गाड़ी और उसके हार्न बजाने के ढंग को खूब पहचानते थे। वह तेज गाड़ी चलाते सरपट जा रही थीं, उसी समय पुलिस की लारी सामने से आ रही थी, एक इंस्पेक्टर उसे चला रहा था। हार्न की आवाज से वह समझ गया कि यह गाड़ी कुमारी ज्योतिर्मय गांगुली की है। आगे बढ़ने के चक्कर में पुलिस इंस्पेक्टर को वह कई बार झिड़क भी चुकी थी। इंस्पेक्टर को बदला लेने का मौका भी मिल गया। उसने अपनी लारी को वेतहाशा दौड़ाकर कुमारी गांगुली को टक्कर मार दी। टक्कर इतनी भयंकर थी कि गाड़ी और कुमारी ज्योतिर्मयी गांगुली का कचूमर निकल गया, अस्पताल में उनकी मृत्यु हो गई।

23 नवम्बर 1945 को निकली ज्योतिर्मयी गांगुली की शवयात्रा में असंख्य भीड़ थी। उनकी शहादत भी स्वाधीनता आन्दोलन के लिए ही थी। भारत के स्वातंत्र्य संग्राम में उनका योगदान भी अद्वितीय है। ○○

34 कुमारी राधा पाटनकर

कुमारी राधा पाटनकर उस्मानाबाद जिले के "नीलंगा" गाँव की रहने वाली थीं। उसने हथियार चलाने का भी प्रशिक्षण लिया ताकि हैदराबाद पुलिस और रजाकारों से उनकी रक्षा की जा सके। वहाँ एक ग्राम सेना भी बनाई गयी थी, कुमारी राधा पाटनकर उसमें भी सम्मिलित थीं।

हैदराबाद पुलिस तथा रजाकारों ने मिलकर नीलंगा गाँव पर सशस्त्र आक्रमण कर दिया। ग्रामवासी डरकर मुकाबला कर रहे थे। कुमारी राधा पाटनकर वेतहाशा बन्दूक चला रहीं थीं और सेना के जवान मौत के घाट उतारे जा रहे थे। हताहतों की संख्या इधर भी काफी थी। युद्ध की भयानकता बढ़ती जा रही थी और उसमें कुमारी राधा पाटनकर भीं शहीद हो गयीं। तिलमिलाए पुलिस के जवानों ने पूरे गाँव मे आग लगाकर उसे तहस नहस कर दिया। ○○

35 वीरम्मा

हैदराबाद पर निजाम शाही हावी थी। इधर लोगों पर अनेक अत्याचार किए जाते थे। एक स्वतंत्र राज्य होने के कारण भारत में उसके विलय के लिए आन्दोलन हुआ। वीरम्मा एक बहुत दिलेर महिला थीं। विलय आन्दोलन में उसने भी बढ़-चढ़ कर भाग लिया। उस पर जुर्माना किया गया, वीरम्मा ने जुरमाना देने से इनकार कर दिया।

फरवरी 1948 में रजाकारों द्वारा वीरम्मा के गाँव पर आक्रमण कर

दिया गया। वीरम्मा और उसके पति भूमंडल अकैया को पकड़ लिया गया और रस्सी से बाँधकर दोनों को आग में झोंक दिया। यह कोलू कांडा गाँव वारंगल जिले में है। दोनों की शहादत अमर है। ○○

36 श्रीदेवी मुत्सद्दी

श्रीदेवी मुत्सद्दी का विवाह श्रीराम चन्द्र मुत्सद्दी के साथ हुआ था। वे कानपुर में आर्यसमाज भवन के निकट एक दुमंजिले भवन में रहते थे। श्रीदेवी बहुत उदार, स्नेहिल तथा एक सूझ बूझ वाली महिला थीं। उनकी सूझबूझ के कारण कई क्रांतिकारी पकड़े जाने से बच गए थे।

रामचन्द्र का परिचय जब चन्द्रशेखर आजाद से हुआ तो वे कहने लगे कि इसे आप अपना घर ही समझिए और वहाँ पर आते-जाते रहने की कृपा बनाए रखेंगे। आजाद हँसते हुए बोले कि हम लोगों के आते-जाते रहने से कहीं आप मुसीबत में न फँस जाएँ। इस पर श्री देवी ने कहा, मुसीबत! कैसी मुसीबत? आप लोग अपने जीवन को सतत संकट में डाले हुए हैं तो फिर आपके कारण थोड़ा बहुत संकट आयेगा भी तो कौनो बात नाहीं, हम लोग मोम अथवा मिट्टी के तो बने नहीं हैं। आप और आपके सभी साथी अवश्य आएँ। और थोड़ा बहुत दाल-दलिया तो हम जुटा ही सकते हैं। इस प्रकार क्रांतिकारियों के वहाँ आने-जाने का क्रम बना रहा।

एक बार आजाद उनके यहाँ ठहरे हुए थे, रक्षाबंधन का दिन था और श्री देवी थाल सजाकर अपने भाई को राखी बाँधने जा ही रहीं थी। अचानक दरवाजा बड़ी जोर से खट खटाया गया। आजाद तुरंत समझ गए कि पुलिस वाले आ गए हैं। उन्होंने लपक कर अपनी पिस्तौल उठाकर धोती में छिपा

ली। श्रीमती मुत्सद्दी दरवाजा खोलने गईं। दरवाजा खोलते ही पुलिस वाला सीढ़ी चढ़कर ऊपर आ गया। आजाद ने उनसे राम राम की। अब इंस्पेक्टर श्री देवी को समझाते हुए बोला, आजकल गिरफ्तारियों का दौर चल रहा है, जरा श्रीरामचंद्र जी मुत्सद्दी को बता दीजिए कि बचकर रहें। मैं तो इस समय भाई को राखी बाँधने जा रही थी। अब आप आ गए हैं तो पहले आपको ही राखी बाँध दूँ। इस प्रकार इंस्पेक्टर की कलाई पर राखी बाँधी और जोर से कहा, अरे! रामू जरा लड्डू तो ला, भाई साहब के रूमाल में लड्डू बाँधकर उनको विदा किया। आजाद, जो रामू बने थे, खिल-खिलाकर हँस पड़े और मुसीबत टल गई।

एक बार क्रांतिकारी लोग कुछ अधिक संख्या में आ गए। खिचड़ी बनाने का निश्चय हुआ। अब इतना बड़ा कोई बर्तन नहीं था। बाल्टी में खिचड़ी पकाई जा रही थी। उसी समय रामचन्द्र मुत्सद्दी के एक मित्र आ गए। आजाद और उनके साथी कोने में दुबक गए। उन्होंने पूछा, भाभी यह क्या पक रहा है? श्री देवी कहने लगीं, खीर बन रही है। वे बाल्टी में झाँकने के लिए अंदर जाने लगे तभी श्री देवी कहने लगीं, भइया! उधर मत जाइए। हमारी भाभी आई हुई हैं, बड़ी छूत-छात वाली महिला हैं। अगर उन्हें पता लग गया तो कहीं खीर फेंक ही न दें। इतना सुनकर न तो वे रसोई में गए और न ही वहाँ रुके।

बंबई के गवर्नर को मारने के लिए दुर्गा भाभी को तैनात किया गया था। उस समय उनके साथ विश्वनाथ वैशंपायन, सुखदेव राज और पृथ्वीसिंह थे। वैशंपायन को कुछ सलाह-मशविरा के लिए कानपुर में आजाद के पास भेजा। लेकिन कानपुर पहुँचते ही उन्हें हैजा हो गया, उस समय श्री मुत्सद्दी ने ही डाक्टरों को बुलाकर उनका इलाज करवाया और स्वयं उनकी सेवा की।

क्रांतिकारियों को आश्रय देने के कारण मुत्सद्दी परिवार को भी काफी संकटों का सामना करना पड़ा, पुलिस ने काफी तंग किया, किन्तु इसमें भी वे आनंद का अनुभव कर रहे थे।

○ ○ ○